होली

वर्ष : ४ अंक : ६
२१ मार्च, २०२४

RNI-UPHIN/2021/79954

पंद्रह रुपए

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

कविता दिवस पर फायकू चर्चा

छन्दों की निराली बात
फायकू है लाजवाब
तुम्हारे लिए

रंगों की मस्ती में होली का धमाल तुम्हारे लिए

होली के फायकू

A Complete Dulha Collection

NIIMMY collection

All Branded Readymade Cloths Available

Raymond Siyaram's Grasim

Shanni Khan
7500359311

Mohd. Saqib
8433211867

हर प्रकार के कोट-पेंट,
शेरवानी, इंडोवेस्टर्न, जवाहरकट,
जोधपुरी सूट, डिजाइनर सूट,
कुर्ता-पाजामा आदि उपलब्ध है।

निशुल्क प्रकाशन

Lahoti Market, Shop No. A/1, Station Road, Najibabad

संपादकीय

सभी फायकूकारों का आभार

यह सच है कि फायकू सर्वप्रथम श्रीभगवान की असीम अनुकम्पा से प्रथम बार मेरे ही मुंह से निकली। देखते ही देखते अर्चना राज नागपुर से, रश्मि अभय पटना से, सविता मिश्रा आगरा से, आशा पाण्डेय ओझा 'आशा' जोधपुर से और न जाने कितने साहित्यकारों ने फायकू की पतवार संभाली। तत्पश्चात २०१३ के आगरा ताज महोत्सव में प्रसिद्ध व्यंग्यकार अविनाश वाचस्पति जी ने विस्तृत रूप से फायकू पर चर्चा की। कुछ काल अनुकूल नहीं रहा मगर २०२३ में जिस तरह से डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' ने फायकू को अपने कंधे पर बैठाया और उसे दूर के दर्शन कराए तो मानो फायकू को पंख लग गए। फायकू पर चर्चा के दौरान जिन्होंने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए हैं, उनका सारांश प्रस्तुत है-

महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा सम्मानित और आज की सशक्त फायकूकार रश्मि अग्रवाल जी लिखती हैं- हमें भी यह विद्या अच्छी लगी थी। हमने भी फायकू की रचना की। डॉ. भूपेन्द्र कुमार- फायकू केवल कुछ शब्दों की जोड़ गाँठ ही नहीं है इसमें शब्द हैं अर्थ हैं भाव हैं काल है परिस्थितियों का वर्णन है। नरेश सिंह नयाल- पहली बार इस विधा से मेरा परिचय डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' आदरणीय महोदय जी के सौजन्य से तब हुआ जब मैं खेलों के सिलसिले में चीन के शहर होंगझोऊ में था। सुखमिला अग्रवाल, 'भूमिजा' - फायकू की सर्वप्रथम जानकारी मुझे अनिल अभिव्यक्ति पटल पर डॉ. अनिल शर्मा अनिल जी द्वारा प्राप्त हुई। पहली बार में ही यह बहुत विशिष्ट विधा लगी। शुभा शुक्ला निशा- साहित्य के आधुनिक युग की इस प्यारी सी विधा के जनक आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी हैं और आदरणीय अनिल कुमार जी ने सजाया और संवारा है। नवनीता दुबे नूपुर- सुंदर, सीधे, सरल शब्दों में हम फायकू किसी भी विषय, पर, किसी विशेष त्योहार या दिवस के अवसर पर लिखते आ रहे हैं और सुंदर रंगीन अभिव्यक्ति में हमारी अभिव्यक्ति फायकू के माध्यम से विश्व विख्यात हो रही है। सुनील श्रीवास्तव राज- कम शब्दों में अधिक कहने की तकनीक जिस विधा में होती है वह पाठकों को भी आकर्षित करती है और जनसामान्य में अपना एक स्थान बना लेती है। अनुजा दुबे 'पूजा'- फायकू अपने आप में समर्पण भाव को समेटे एक अद्भुत विधा है। डॉ. पुष्पा सिंह- जीवन में रस भरती यह लघु विधा कम समय में रचनाकारों की अभिव्यक्ति में सहयोग कर आनंदवर्धक साबित हुई है। आज यह विधा साहित्यकारों में अपनी पहचान के साथ प्रेरक साबित हो रही है। आगामी दिनों में सबकी लाड़ली विधा साबित हो सकती है। संतोष गर्ग 'तोषी'- इसे लिखना और पढ़ना आसान है लेकिन सिर्फ ६ शब्दों में फायकू कविता को बांधना वही जानता है जो सच में सही रचनाकार हो। दिनेश कौशल- मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि आने वाले समय में 'फायकू' नामक काव्य रचना स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। विनीता चौरासिया- नौ शबद और तीन पंक्तियों की ये विधा स्वयं में विशिष्टता लिए हुए है जिसमें काव्य के समस्त रसों और भावों को सरलता से प्रस्तुत किया जा सकता है। सरिता त्रिपाठी- आज जब फिर समूह में सबको विचार लिखते देखा तो हमने भी सोचा क्यों न एक प्रयास कर ही लिया जाय। डॉ. प्रिया- यह लेखन एक ऐसा लेखन है जिसे हम गुनगुना सकते हैं, हास्य में भी प्रस्तुत कर सकते हैं। इस लेखन में 'तुम्हारे लिए' वाक्य सामने वाले के लिए समर्पित है। कनक पारख- सीप में मोती की जैसे कीमत होती है ठीक उसी तरह 'फायकू' विधा की साहित्य जगत में कीमत स्थापित हुई है। सत्येन्द्र शर्मा 'तरंग'- फायकू कम शब्दों में सम्पूर्ण कथ्य एवं समर्पण भावों को व्यक्त करने का अत्युत्तम माध्यम है। पंडित राकेश मालवीय मुस्कान- फायकू का ऐसा प्रवाह चलाया कि आज फायकू विधा की बाढ़ आ गई। निकेता पाहुजा- मन के भावों को शब्दों में समा देना ही तो कवि का कर्तव्य है और फायकू विधा तो और भी अनूठी है। योगिता चौरसिया 'प्रेमा'- साहित्यकारों की मनपसंद विधा बन चुका है फायकू। लक्ष्मी सिंह- फायकू कविता का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। बहुत कम समय में ही यह जन-जन में बहुत प्रचलित हो गई है। प्रो. पूनम चौहान- फायकू साहित्य रूप में एक नई विधा है जिससे कम शब्दों में अधिक भावभिव्यक्ति संभव हो पाती है। और इसका अंतिम समापन, तुम्हारे लिए, से जब होता है तो यह समाज से जुड़ जाता है। ईश्वर चंद्र जायसवाल- जो रचनाकार छंदबद्ध तरीके से नहीं लिख सकते हैं वे फायकू विधा में आसानी से लिख सकते हैं। अशोक विश्नोइ- एक नई विधा का उदय हुआ है। अमन जी व डॉ. अनिल जी के माध्यम से हुआ है और वह विधा है फायकू यह बहुत ही सरल है कम शब्दों में बहुत बड़ी बात कही जाती है। अक्षि त्यागी- फायकू विधा एक ऐसी विधा है जिसमें हर कोई अपने मन के विचारों को कम शब्दों में पूरी कर देता है। डॉ. घनश्याम बादल, रुड़की- फायकू के समर्थकों का मानना है कि यदि कोई छंद या फिर सुर लय और ताल में पारंगत नहीं है तो उसे भी अपने भावों की अभिव्यक्ति का काव्य के माध्यम से अधिकार है। ज्योतिराज मधुरिमा- फायकू विधा में लिखना ही अपने आप में सुंदर भाव जागृत कर जाता है। डॉ. रेखा सक्सेना- फायकू विधा में कविता रचना आनन्ददायक है। यह रस सिद्ध छंदमय रचना है। विनोद शर्मा- इस विधा के जनक 'अमन त्यागी जी' एवं इस को अभिसिंचित करने वाले अनिल शर्मा 'अनिल' जी के प्रयासों की यह विधा सदैव ऋणी रहेगी। सीता त्रिवेदी- इतनी सरल सुहानी विद्या गजब की विधा, जिसकी तुलना किसी और से करना बिल्कुल बेमानी होगी। रेनू बाला सिंह- अमन त्यागी जी एवं अनिल शर्मा जी ने फायकू विधा को हिंदी साहित्य जगत में रचनात्मक खोज कर इतिहास रच दिया है। मैत्री मेहरोत्रा 'मैत्री'- फायकू विद्या नवीनतम होने के साथ-साथ आसानी से समझ आ जाती है और नए कलमकारों को भी रचना के अवसर प्रदान करती है। रंजना हरित- जिसका उद्गम आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी साहित्यकार के कर कमल द्वारा हुआ। और फायकू विधा को नन्हे-नन्हे कदमों से उंगली पड़कर चलने के साथ साथ ही दौड़ना सिखाया अनिल अभिव्यक्ति ग्रुप के संपादक डॉ. अनिल कुमार शर्मा 'अनिल जी' ने। महेजबीन मेहमूद राजानी- मैं अमन त्यागी जी और डॉ. अनिल जी का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं कि उन्होंने फायकू विधा से परिचित करा कर हमारे ज्ञान में बढ़ोतरी करने का नेक काम इस मंच द्वारा किया है। मीना जैन- कुल मिलाकर ६ शब्दों की सार्थक रचना। अपने मनोभावों को प्रकट करने का सशक्त माध यम। कम शब्दों में सार गर्भित बात कहना गागर में सागर समाने बाली कहावत को चरितार्थ करता है।

सभी फायकूकारों के आभार सहित।

पत्रिका कैसी लगी? अवश्य बताएं।

अमन कुमार

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

मूल्य पंद्रह रुपए

वर्ष : ४, अंक : ०६, २१ मार्च, २०२४

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

सदस्यता प्राप्त करें

एक साल १००० रु., दो साल १६०० रु., पांच साल ४८०० रु.

अंक की हार्ड कॉपी न मिल पाने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

वैधानिक-समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/ कविता/ कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा। सभी पद अवैतनिक

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद से मुद्रित तथा ए-७, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद- २४६७६३ जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।

संपादक-अमन कुमार

मोबाईल नं.- 9897742814

E-Mail- opendoornbd@gmail.com

RNI-UPHIN/2021/79954

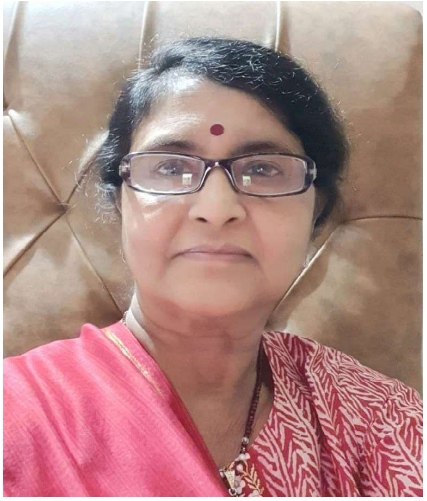

कैसे पनपी विद्या फायकू? जाने हम अन्जाने तुम्हारे लिए

रश्मि अग्रवाल

फायकू हिन्दी साहित्य में प्रथम बार २०१२ में प्रयोग किया गया था। फायकू नाम से जो रचना कही गयी वह मात्र तीन पंक्ति की रचना है और इसमें मात्र नौ शब्दों का प्रयोग किया गया, जिनमें अंतिम दो शब्द 'तुम्हारे लिए' समर्पण भाव के साथ निश्चित कर दिए गए हैं। अब फायकू की इन तीनों पंक्तियों को भी तीन लोक के रूप में समझने का प्रयास करें। इनमें प्रथम पंक्ति में उद्‌देश्य होता है। अर्थात वह बात जो कही जा रही है, जबकि दूसरी पंक्ति में स्थिति वर्तमान रहते हुए अपनी इच्छा, विश्वास, योजना आदि रचनाकार का कृत्य स्पष्ट करती है। और तीसरी पंक्ति में रचनाकार की समस्त कर्मशीलता, इच्छाएं, विश्वास, योजनाएं आदि अपने इष्ट के प्रति समर्पित हो जाती हैं। प्रश्न यह था कि समर्पण को कैसे प्रदर्शित किया जाए? तमाम चिंतन और मंथन के बाद समर्पणभाव को ध्यान में रखते हुए अंतिम दो शब्द 'तुम्हारे लिए' निश्चित किए गए। ये दो शब्द 'तुम्हारे लिए' इस नई विधा को न सिर्फ नवीनता प्रदान करते हैं बल्कि उद्‌देश्य की पूर्ति भी करते हैं। यही दो शब्द इस रचना को प्रारंभ से अंत तक ऐसे बांध लेते हैं कि अनजान और अकवि भी सरलता के साथ फायकू की रचना कर सकता है। यह विद्या सर्वथा नूतन है बल्कि इसकी व्याकरण भी एकदम नयी और मात्राओं का मिथक तोड़ती हुई दृष्टिगोचर होती है। परन्तु पहली और दूसरी पंक्ति के भाव एक-दूसरे को स्पष्टता देते हुए होना आवश्यक है तभी फायकू में रचना के भाव समझ आयेंगे व 'तुम्हारे लिए' ये दो शब्द हम किसी को भी समर्पित कर सकते हैं।

फायकू की प्रथम पंक्ति में चार शब्द, दूसरी पंक्ति में तीन शब्द और तीसरी व अंतिम पंक्ति में दो शब्द 'तुम्हारे लिए' प्रत्येक फायकू के लिए आवश्यक निर्धारित किए गये हैं। परन्तु फायकू का प्रयोग ऐतिहासिक रूप से, उपनाम हेतु अथवा लोगों के समुच्चय में सुव्यवस्थित करने हेतु प्रकार के रूप में विकसित हुआ। यह विद्या धरती से जुड़ी है, इसमें कल्पना के घोड़े उड़ा सकते हैं, मगर पुनः धरती पर आ जाते हैं। क्योंकि FAYKO में FAY का अर्थ है तलछट (जमीन से मिला हुआ)। आयरिश में सुना जाता है कि इस शब्द का उपयोग परि अथवा अप्सरा के रूप में भी किया जाता है। प्रसिद्ध है कि आयरिश अपने नाम के बाद FAYKO शब्द का प्रयोग करते हैं। आयरिश में थल्ज्ञ्ट का मतलब 'उड़ाने के लिए, हवा' (To blow, Wind) है। उतना ही उड़ाना जिससे धरती पर वापिस आने में कोई कष्ट न हो।

सिर्फ नौ शब्दों से काम चलाए जाने की बात जब कही गयी तब एक भूचाल सा आ गया क्योंकि इस विद्या का जन्म दूरसंचार के फेसबुक पटल पर हुआ था। इसलिए इससे जुड़ने वाले लोगों की संख्या बढ़ती चली गयी। कुछ साहित्यकार फायकू की तुलना 'हायकू' से करते हुए पक्ष और विपक्ष में रहे। इसकी आलोचना का दौर चला, तत्पश्चात् फायकू को समझने का प्रयास भी किया गया और स्वयं फायकू के विरोध का उत्तर भी 'फायकू' में दिया जाने लगा यानि सीधे-सीधे कहें तो उन्हें फायकू भाने लगे। लेकिन जो लोग फायकू के पक्ष में थे उन्होंने तो, बहुत से विषय को छूते हुए फायकू की जैसे- बाढ़ ही ला दी थी। परिणाम यह हुआ कि २०१३ के आगरा ताज महोत्सव में प्रसिद्ध व्यंग्यकार अविनाश वाचस्पति जी ने विस्तृत रूप से फायकू पर चर्चा की। देखते ही देखते अर्चना राज नागपुर से, रश्मि अभय पटना से, सविता मिश्रा आगरा से, आशा पाण्डेय ओझा 'आशा' जोधपुर से और न जाने कितने साहित्यकारों ने फायकू की पतवार संभाली और प्रत्येक आलोचना का उत्तर देते हुए फायकू पर कलम चलाने लगे क्योंकि

सहज, सरल अस्तित्व है
फायकू की पहचान
तुम्हारे लिए।

आप सभी को उत्सुकता होगी और होनी भी चाहिए कि फायकू विद्या का सृजन नजीबाबाद में कहाँ से कैसे हुआ?

नजीबाबाद निवासी ओपन डोर के संपादक श्री अमन कुमार त्यागी जी के आवास पर अचानक एक संगोष्ठी रखी गयी थी। उसमें कई साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी थी। हमनें भी अपनी रचना प्रस्तुत की थी। कार्यक्रम के समापन पर अमन जी से भी उनकी कोई रचना सुनाने का आग्रह किया गया था। कुछ देर पश्चात् उन्हें स्मरण आयी वह विद्या जिसपर उन्होंने काफी समय पूर्व काम किया था- वो थी 'फायकू विद्या'। अमन जी ने कुछ फायकू ही सुनाए। फायकू सुनकर सभी साहित्यकार फायकू के विधान को समझने हेतु आतुर दिखाई दिये तब साहित्यकारों की उत्सुकता को ध्यान में रखते हुए अमन जी ने फायकू पर विस्तृत चर्चा की थी और बताया था कि २०१३ में फायकू का सफर प्रारम्भ किया था पर २०१३ से २०२३ के मध्य का समय

फायकू के मामले में अनिश्चितता भरा रहा जिसके लिए उन्होंने स्वयं को ही दोशी मानते हुए बताया कि इस बीच क्या-क्या हुआ बताने के लिए कुछ विशेष नहीं है? लेकिन उस चर्चा में अमन जी ने फायकू के विधान पर चर्चा की और बताया कि फायकू का प्रयोग ऐतिहासिक रूप से, उपनाम के लिए अथवा लोगों को समूह से क्रमबद्ध करने के तरीके के रूप में विकसित हुआ है। व्यवसाय, मूल स्थान, कबीले संबद्धता, संरक्षण, माता-पिता, गोद लेने और यहाँ तक कि शारीरिक विशेषताओं के आधार पर भी फायकू लोगों की पहचान की जा सकती है। परंतु यहाँ हम 'फायकू' नाम से साहित्य की नीवन विद्या को विकसित कर रहे हैं। एक ऐसी विद्या जो २०१२ में नजीबाबाद से फेसबुक माध्यम से अवतरित हुई और किसी दावानल की भांति फैल गयी। फायकू पर चर्चा करते हुए अमन जी ने बताया कि प्रथम बार उनके मुँह से निकला फायकू

गुनाहों की हर तरकीब
मुझे आजमाने दो
तुम्हारे लिए।

कुछ साहित्यकारों ने 'फायकू' विद्या की तुलना 'हायकू' से करते हुए इसे सिरे से खारिज़ भी किया लेकिन 'फायकू' प्रथम दृष्टि में भले ही 'हायकू' जैसा प्रतीत होता हो मगर इसकी व्याकरण 'हाईकू' से एकदम भिन्न है। हाईकू में तीन पंक्तियां होती हैं, जिसकी प्रथम पंक्ति में पाँच अक्षर, दूसरी पंक्ति में सात अक्षर और तीसरी पंक्ति में पुनः पाँच अक्षर होते हैं। जबकि फायकू मात्र नौ शब्दों से मिलकर बना है। इसलिए फायकू की तुलना हायकू से करने की भूल कदापि न करें। बल्कि फायकू को इसके ही विधान के रूप में समझने का प्रयास करें।

कुछ समय पश्चात् हमारे आवास पर दि ग्राम टुडे की पत्रिका 'रचनाकार विशेषांक' का लोकार्पण रखा गया और उसमें देहरादून से दि ग्राम टुडे के सम्पादक श्री शिवेश्वर दत्त पाण्डेय जी, धामपुर से सम्पादक, लेखक डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' जी, नजीबाबाद से अन्य साहित्यकारों में से डॉ. प्रेम कुमार 'प्रेम जी, ओजकवि श्री कपिल श्रेष्ठ जी, डॉ. बेगराज यादव जी, श्री आलोक त्यागी जी, श्री आनन्द विभोर यादव जी, श्री श्याम प्रकाश तिवारी जी, अमन कुमार त्यागी आदि ने अपनी प्रस्तुति में फायकू ही सुनाए थे। हमनें भी उसी समय कुछ फायकू तैयार किए और सुना दिए। बस फिर क्या था? मिट्टी में दबे बीज को पुनः हवा मिलती गयी। अंकुर तो २०१२ में फूट ही चुका था, अब तो पौधा बनकर मिट्टी के गर्भ से निकलकर खुले आवरण में अंगड़ाई लेने का समय था। जब फायकू सम्मेलनों का दौर निरंतर चलने लगा था। नये-नये साहित्यकार उनसे जुड़ने लगे थे और फायकू विद्या को अपनाते हुए, उस पर कलम चलाने लगे। नये-नये विषय पर फायकू लिखे जाने लगे। परिणाम यह हुआ कि 'ओपन डोर' का 'फायकू विशेषांक' १४ अक्टूबर २०२३ को प्रकाशित किया गया। जिसमें पुराने फायकूकारों के अतिरिक्त नजीबाबाद के व अन्य शहरों के साहित्यकारों ने भी पूरे जोश व उत्साह से सहभागिता की थी। हमें भी यह विद्या अच्छी लगी थी। इसलिए इस अंक के लिए हमने भी १५० फायकू की रचना की और इस विशेष अंक में सहभागिता की। इस फायकू के विशेष अंक की चर्चा खूब चली... कुछ साहित्यकारों ने इसकी आलोचना भी फायकू के द्वारा ही की थी। तब लगा आलोचना भी उसी कार्य की होती है जिसपर विशेष दृष्टि होती है।

तात्पर्य यही है कि कोई भी नवीन कार्य, वो साहित्य हो या कुछ और को अपनाने के लिए समय के साथ-साथ दिमाग का खुला होना भी आवश्यक होता है और उस कार्य के परिदृश्य में जाकर उसे आत्मसात् करना भी जरूरी होता है। हाँ संशोधन का स्थान प्रत्येक विद्या में होता है और होना भी चाहिए। फायकू विद्या पर शोधादर्श का यह विशेष अंक आपके हाथों में है अब सम्मानीय बुद्धिजन इसे किस प्रकार स्वीकारते हैं, हमारे लिए यह भी शोध का ही विषय होगा। फायकू जैसी नवीन विद्या को साहित्यकारों तक पहुंचाने के लिए मैं इस विशेष अंक के सम्पादक श्री अमन कुमार त्यागी जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई प्रेषित करती हूँ कि इस नयी विद्या के जनक श्री अमन त्यागी को मेरी अनंत शुभकामनाएँ कि वो इसी प्रकार साहित्य की नूतन विद्याओं पर कार्य करते रहें और अन्य साहित्यकारों को भी जोड़ते रहें।

हमको भी भा गयी
फायकू की शान
तुम्हारे लिए।

अन्त में बस यही समझा है, अन्त कभी नहीं होता।।
जिस पे उसकी इनायत उसे, रन्ज कभी नहीं होता।।
जरूरी है जीवन के लिए, कुछ तो बातें जान लेना।।
सिखाने वाला कोई भी शब्द, तन्ज़ कभी नहीं होता।।
जिससे सीख न मिले वो शख़्स, सन्त कभी नहीं होता।।

'फायकू कविता'

कम शब्दों में सब लिख दूं
या तुम कहो तो
सागर में गागर भर दूं
चलो तुम्हारी ही मान लेता हूं
मैं तो बस फायकू लिख देता हूं।

जैसे जैसे समय काल बीतता है वैसे वैसे साहित्य भी अपना सफर तय करता है और सफर तय करने की जुगत में सृजन विधाएं भी करवट लेती हैं। या यों कहें कि बदलती रहती हैं। इसी क्रम में एक छोटी परंतु सटीक विधा है 'फायकू'। इसमें यों तो हम अपने भाव केवल नौ शब्दों में बयान कर देते हैं। रख दिया करते हैं परंतु उनको पिरोने की सृजनात्मकता देखें तो पहली पंक्ति में चार शब्द सुजज्जित होते हैं तथा दूसरी पंक्ति में मात्र तीन शब्द विराजमान हैं। तथा तीसरी और अंतिम पंक्ति की विशेषता है कि उसमें दो शब्द 'तुम्हारे लिए' पूर्व सज्जित हैं।

अब देखने वाली बात यह है कि इस विधा में हम केवल शृंगार या प्रेम ही नहीं बल्कि साहित्य की हर रस का सृजन ब खूबी कर सकते हैं। केवल सृजन के दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि देखा जाए तो यह विधा समय के लिहाज से भी सुगम और लाभप्रद है। अर्थात सृजन और पाठन के लिए कम समय व्यय किए बिना रसास्वादन किए जाने वाली विधा है।

यदि अपनी बात करूं तो पहली बार इस विधा से मेरा परिचय डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' आदरणीय महोदय जी के सौजन्य से तब हुआ जब मैं खेलों के सिलसिले में चीन के शहर होंगझोऊ में था। तब से प्रयासरत हूं कि इस खास विधा में भी कुछ अपना सहयोग दे सकूं।

– नरेश सिंह नयाल
देहरादून, उत्तराखंड

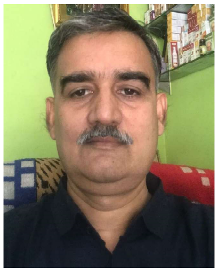

एक दो फायकू तो रोज लिखें

डॉ. भूपेन्द्र कुमार

धामपुर बिजनौर उ.प्र.

आज कविता दिवस है आईए विचार करते हैं कविता तो हर दिन हर पल उकेरी जा सकती है कवि के पास अधिक से अधिक शब्द और शब्दों के पर्यायवाची हों इसके साथ बस मन में विचार कोई ऐसा विचार जो मन को बार बार झकझोर रहा हो हाँ आज कविता दिवस है इसलिए कुछ शब्दों को जोड़कर एक कविता लिखना जरूरी है वह किस शैली में तुकबंदी की जाए यह तो कवि के पास स्वतंत्रता रहती ही है फिर भी फायकू पर विचार माँगे हैं तो क्यों ना फायकू पर ही कुछ लिखा जाए जब भी समय मिले कविता लिखें और एक दो फायकू तो रोज लिखें यूँ तो जाने आम बोलचाल में हम फायकू बोल ही देते हैं परन्तु अनभिज्ञ होने के कारण समझ नहीं पाते हैं।

ठलुवा समय बिताना मत
विचार बने फायकू
तुम्हारे लिए

फायकू केवल कुछ शब्दों की जोड गाँठ ही नहीं है इसमें शब्द हैं अर्थ हैं भाव हैं काल है परिस्थितियों का वर्णन है कह सकते हैं फायकू रचनाकार जब फायकू लिखता है वह अपने मन की हर बात कहने के लिए स्वतंत्र है। फायकू कार पुराने नहीं हैं पर पुराने रचनाकार फायकू कार बन सकते हैं नवोदित साहित्यकारों के लिए फायकू विधा सहजता व सरलता से समझी जा सकती है इसलिए नये साहित्यकारों को फायकू सृजन करने में सफलता मिलेगी ही मिलेगी। हिन्दी साहित्य में एक सरल काव्य प्रस्तुति के रूप में फायकू जोड़कर विद्वान इस सहज सरल विचार को लघु विचार भाव कविता के रूप में मान्यता प्रदान करेंगे।

बिजनौर उ.प्र. की साहित्यिक भूमि और यहाँ के निवासी आदरणीय अमन त्यागी जी को फायकू के प्रथम रचनाकार और डॉ. अनिल शर्मा अनिल जी को फायकू के प्रथम मार्गदर्शक साहित्यकार ही सदैव जाना जाएगा क्योंकि दोनों ने फायकू विधा को प्रथम बार लिखकर सभी देश दुनिया के कविता प्रेमियों को इस विधा से अवगत कराया।

फायकू जितना लिखना आसान है उससे अधिक समझना भी -

रंग गुलाल पिचकारी लाया
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

अपनी बात इतनी सरलता से कहकर दूसरे को समर्पित करना फायकू का विशेष सौंदर्य है बस इस बात का ध्यान रखकर पहली पंक्ति में चार शब्द दूसरी पंक्ति में तीन शब्द और अन्तिम पंक्ति में तुम्हारे लिए जोड़कर फायकू को पूर्ण किया जाता है।

कविता दिवस है होली का त्योहार है तो क्यों न कुछ फायकू होली के ही लिखें जाए एक बड़ी दुःखद घटना है चिकित्सा जगत के क्रान्तिकारी डॉ. अवधेश पांडेय जी की मृत्यु एकादशी के दिन देहरादून ऋषिकेश मार्ग पर कार एक्सीडेंट में हुई है ये मानव समाज के लिए लाभदायक बैक्टिरिया माइक्रोबायोम के बिना जीवन असंभव एक बड़ी रिसर्च कर रहे थे इनके विडियो यू टियूब पर सुनें व देखे जा सकते हैं इस महान चिकित्सक को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि है और कुछ बिछुड़ गए देहधारियों के लिए होली का पहला दिन एकादशी को उन्हें याद करते हुए होली का त्योहार मनाया जाता है इस परम्परा को भारतीय गाँवों और कस्बों में सहज ही देखा जा सकता है -

१

बसते नयनों में दृश्य
नित्य स्वप्न सरीखे
तुम्हारे लिए

२

तुम छोड़ गए निष्ठुर
मग नयन निहारें
तुम्हारे लिए

३

अब जहाँ रहो तुम
खुशियाँ खुशियाँ हों
तुम्हारे लिए

४

मिलना और बिछुड़ना मानव
अनिवार्य शर्त है
तुम्हारे लिए

जब ये सब कुछ निश्चित ही है तो फिर आनन्द का अनुभव होली के रंगों में करना चाहिए

१

रंग नीला पीला लाल
हमने लिया गुलाल
तुम्हारे लिए

२

लगाके रंग बदलके ढंग
ऐसा करें कमाल
तुम्हारे लिए

३

हमने हार की स्वीकार
भूलाके पिछली बात
तुम्हारे लिए

४

खेले होली का त्योहार
विस्मृत करके रार
तुम्हारे लिए

५

कुल मिलाकर देख लीजिए
फायकू नेक विचार
तुम्हारे लिए

६

कवि कहलाने को फायकू
है सहज अभिव्यक्ति
तुम्हारे लिए

अनिल अभिव्यक्ति मंच की ओर से आमंत्रित फायकू पर विचार साहित्यकार बंधु निश्चित ही अधिकाधिक लिखेंगे फायकू हिन्दी साहित्य में नवीन विधा है इसके रूप स्वरूप में परिवर्तन भविष्य में क्या क्या देखने को मिलेंगे अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है वर्तमान में तो यह सहज सरल रूप में लिखा पढ़ा और समझा जा सकता है।

वाट्सएप के 'अनिल अभिव्यक्ति' पटल पर व्यक्त विचार

संकलन
डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'

फायकू तुम्हारे लिए

हिन्दी साहित्य अनेक विधाओं से समृद्ध है और समय-समय पर लेखक नई विधाओं का भी अविष्कार करते रहे है। इसी क्रम में जब हम फायकू की बात करते है तो इसे नई विधाओं में सबसे ज्यादा पसंदीदा पाते चार, तीन और दो शब्दों के विधान के साथ फायकू विधा ने सभी को प्रभावित किया है कम शब्दों में अपने मन के सटीक भाव पिरोना और उसे लयबद्ध करना आसान नहीं होता फिर फायकू के अंतिम दो शब्द तुम्हारे लिए तो स्थाई है फिर भी ये तेजी से लेखकों के बीच अपना स्थान बनाने में सफल है और बात को पूरी शिद्दत के साथ कहने में सक्षम है। हास्य, व्यंग्य, शृंगार सभी कुछ फायकू विधा में लिखा जा रहा है। डाक्टर अनिल शर्मा अनिल जी द्वारा संचालित साहित्यक पटल अनिल अभिव्यक्ति के माध्यम से मेरा परिचय फायकू विधा से हुआ अनिल अभिव्यक्ति पटल पर लगातार हर विशेष अवसर या तीज त्योहारों पर रचनाकार फायकू के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दे रहे है। आने वाले समय में फायकू विधा एक समृद्ध साहित्यक विधा के रूप स्थापित होगी इसमें कोई संशय नहीं है

आओ लिखे हम फायकू
अनिल अभिव्यक्ति पर
तुम्हारे लिए

-नवीन जैन अकेला

फायकू एक नई विधा

फायकू हम सबका प्यारा
सहज सरल निराला
तुम्हारे लिए

जी हाँ, फायकू साहित्य जगत की एक नई विधा है। इसे पढना लिखना अत्यंत दिलचस्प है। 'तुम्हारे लिए' अन्तिम पंक्ति में लिखा जाता है जो सुनने में मनोहारी लगता है। यह तीन लाईन की छोटी सी कविता होती है। फायकू वह माला है जिसमें बस तीन लाइन में ही सम्पूर्ण बात जैसे कोई संदेस, हास्य, व्यंग्य, विरह, प्रेम आदि सभी मनोभावों और साहित्यिक विधाओं रूपी अमूल्य मनकों को बखूबी पिरो दिया जाता है। जो गागर में सागर भरने जैसा ही है।

फायकू की सर्वप्रथम जानकारी मुझे अनिल अभिव्यक्ति पटल पर डॉ. अनिल शर्मा अनिल जी द्वारा प्राप्त हुई। पहली बार में ही यह बहुत विशिष्ट विधा लगी। इसे गुनगुनाकर या किसी भी रूप में इसके निश्चित विधान के साथ लिख सकते हैं। यह अत्यंत सहज-सरल तथा सौंदर्य से भरपूर विधा है।

इस विधा ने बहुत जल्दी लेखक-लेखिकाओं तथा पाठकों के बीच लोकप्रियता हासिल कर ली है। निश्चित ही फायकू का साहित्य जगत में उज्ज्वल भविष्य निर्धारित हो चुका है।

फायकू के लिए मैं कहूँगी

फायकू है इक नवाचार
जैसे अनन्त आकाश
तुम्हारे लिए।

-सुखमिला अग्रवाल, 'भूमिजा'
जयपुर राजस्थान

फायकू

अंतर्राष्ट्रीय कविता दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाइयां देते हुए साहित्य की एक महत्वपूर्ण और नवीन विधा फायकू के विषय में कहना चाहूंगी, कि ये एक सीधी सादी और सरल सहज विधा है जो चार, तीन और दो वर्णों की मापनी से लिखी जाती है। इसे लिखने में बड़ा ही आनंद आता है। मैं दो सौ से ज्यादा फायकू विभिन्न विषयों पर अब तक लिख चुकी हूं। शिव शंकर, नेता, चुनाव, बसंत ऋतु, नारी, पिता, बेटियां, और भी अनेक विषयों में मेरे फायकू हैं। इस विधा के द्वारा लेखक कम शब्दों में अपनी बात आसानी से कह भी जाता है और पाठक को सरलता से समझा भी जाता है ।ये सृजन धार्मिक, राजनीतिक, पारिवारिक,सामाजिक सभी विषयों में लिखे जाते हैं फायकू के विशेषज्ञों के अनुसार गीतो को छोटा करके बोलने में अगर कोई विधा सक्षम है तो वो फयाकू है। साहित्य के आधुनिक युग की इस प्यारी सी विधा के जनक आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी हैं ।और आदरणीय अनिल कुमार जी ने सजाया और संवारा है मैं आप दोनो विद्वानों का हार्दिक अभिनंदन करती हूं। साथ ही अन्य सभी फायकूकारों का भी अभिनंदन करती हूं ।

-शुभा शुक्ला निशा
रायपुर छत्तीसगढ़

फायकू ....मेरे विचार से...

शब्द से बांधे सबको, सारगर्भित विचार।
विधा नई फायकू यही, सब पर कर अधिकार।।

आज विश्व कविता दिवस के शुभ अवसर पर फायकू, की बात करना बहुत ही आवश्यक होगा। कम शब्दों में अपनी बात, कहने हिंदी साहित्य की नई विधा जिसकी खोज आ. श्री अमन कुमार त्यागी जी ने की और अनिल अभिव्यक्ति के माध्यम से हमने आ. डॉ. अनिल शर्मा अनिल जी के प्रोत्साहन और दिशानिर्देशन से हमने इसे जाना, समझा और अपने भावों को सटीक रूप में प्रस्तुत करने के लिए उपयोग में लिया। चार, तीन और दो शब्द, जिसमे तुम्हारे लिए से बात का अंत करना फायकू लेखन की प्रमुख विशेषता है। सुंदर, सीधे, सरल शब्दों में हम फायकू किसी भी विषय, पर, किसी विशेष त्योहार या दिवस के अवसर पर लिखते आ रहे हैं और सुंदर रंगीन अभिव्यक्ति में हमारी अभिव्यक्ति फायकू के माध्यम से विश्व विख्यात हो रही है। भविष्य में भी फायकू विधा का सुनहरा समय आने वाला है। सभी लेखक इस विधा में लेखन करके हर्षित हैं और फायकू को अत्यधिक सम्मान भी मिल रहा है। आज की आपाधापी, भागदौड़ के समय में हर रचनाकार अपने भावों को लघु रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, जिसमे इस नवीन विधा का विशेष योगदान है, गागर में सागर भरते हुए विशेष अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने के लिए बहुत ही विशेष भूमिका निभाते हुए मैं इस नई विधा के अन्वेषक और विकास के पथ पर अग्रेषित करने वाले दोनों विद्वानों को हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करती हूं कि इस नई विधा फायकू को साहित्य में प्रयोग में लाकर हम समाज और

साहित्य के उत्थान में सहभागी बन रहे हैं।
सादर विशेष शुभकामनाओं सहित...

-नवनीता दुबे नूपुर
मंडला, मप्र

फायकू पर मेरे विचार

हिन्दी साहित्य में नई विधा के रूप में पहचान बनाने वाली फायकू अभी कुछ दिन पहले तक मेरे लिए भी अजनबी थी। इसके पूर्व जापान से आयातित हाइकू का नाम मैंने सुना था लेकिन उस में मेरी कोई खास रूचि नहीं थी। ओपन डोर पत्रिका में फायकू के बारे में एक आलेख पढ़ा जिससे मेरा काफी ज्ञानवर्धन हुआ और मैं फायकू विधा में लिखने की ओर प्रेरित हुआ। शुरूआत में कुछ अजीब सा लगा, मन में डर भी लगा लेकिन अनिल अभिव्यक्ति मंच पर प्रस्तुत अपनी रचनाओं पर उत्साहजनक प्रतिक्रिया देखकर मन आह्लादित हुआ और रचनाधर्मिता को बल मिला ।

फायकू के बारे में जो मेरी जानकारी है वह मेरी दृष्टि में इतनी पर्याप्त नहीं कि मैं फायकू के रचना-विन्यास तथा तकनीक के बारे में अधिकारपूर्वक कुछ कह सकूं लेकिन सोशल मीडिया के मंचों पर इसके विस्तार को देखकर यह कहने में संकोच नहीं कि कविता की अन्य विधाओं की तरह यह भी अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। वरिष्ठ रचनाकारों से लेकर उदीयमान कवियों तक इसकी बढ़ती लोकप्रियता ही इसकी उपादेयता और प्रासंगिकता को सही अर्थों में प्रतिबिंबित करती है। कम शब्दों में अधिक कहने की तकनीक जिस विधा में होती है वह पाठकों को भी आकर्षित करती है और जनसामान्य में अपना एक स्थान बना लेती है। दोहे इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इसे ही गागर में सागर भरना कहते हैं। मुझे लगता है कि फायकू का स्वरूप भी इसी विचारधारा के अनुरूप है।

अंत में अपने वक्तव्य को विराम देते हुए मैं यह कहना चाहता हूं -

अपने दिल के उद्‌गार
लिखा ऐ फायकू
तुम्हारे लिए
फिर न कहना कभी
मैं अजनबी हूं
तुम्हारे लिए

-सुनील श्रीवास्तव राज
गोरखपुर

कविता लिखने की नई विधा फायकू

हिंदी साहित्य के जगत में कविताओं के संदर्भ में हम अनेको विधाओं से परिचित हैं जो कि कविताओं को लिखने के लिए अलग अलग नियम और पैमाने लिए हुए होती हैं।

इसी कड़ी में २०१२ में कविता लिखने की एक नई विधा फायकू लोगों के सामने आई। किंतु इस विधा का वास्तविक परिचय आदरणीय अमन कुमार त्यागी जी ने कराया। हमारा इस विधा से परिचय डॉ. अनिल कुमार के जाने माने साहित्यिक पटल अनिल अभिव्यक्ति पटल के माध्यम से हुआ।

तीन पंक्तियों में लिखी जाने वाली फायकू विधा एक सरल, सशक्त और सारगर्भित विधा है, जिसमे प्रथम दो पंक्तियों में उद्देश्य, भाव, अभिलाषा आदि को प्रधानता दी जाती है जबकि तीसरी पंक्ति में दो शब्द तुम्हारे लिए (अनिवार्य शब्द) लिखकर कविता को पूर्णता प्रदान की जाती है।

सच पूछा जाए तो फायकू अपने आप में समर्पण भाव को समेटे एक अद्‌भुत विधा है।

कम शब्दों के माध्यम से अपनी पूरी बात,विचार या उद्देश्य लोगो के सामने रख देना इस विधा की खासियत है।

इस विधा को और ऊंचाई तक ले जाने में आ. अनिल शर्मा जी की अहम भूमिका है जो समय समय पर, अलग अलग विषयों के माध्यम से हम सभी को फायकू लिखने को प्रेरित करते रहते हैं। हम इस मंच के तहे दिल से आभारी हैं।

आज यह विधा लोगो के बीच अपनी पहचान बनाने में सक्षम रही है और वो दिन दूर नही जब यह विधा हिंदी साहित्य जगत में भी अपना डंका बजाएगी।

फायकू में छिपा है
समर्पण का भाव
तुम्हारे लिए
विधा यह अत्यंत सरल
लिखे हम सभी
तुम्हारे लिए

-अनुजा दुबे 'पूजा'
वरुण, महाराष्ट्र

फायकू

कम शब्दों को पिरोते
नवविधा की माला
तुम्हारे लिए।

वर्ष २०१२ में मनोभावनाएँ व्यक्त करने की नव विधा 'फायकू' साहित्यकारों के बीच चाहिए इसका परिचय श्री अमन कुमार त्यागी जी ने कराया हमारी इस विधा की जानकारी डॉक्टर अनिल कुमार जी के प्रतिष्ठित साहित्यिक पटल 'अनिल अभिव्यक्ति' के नाम से है उस पटल पर मिली और हम लिखने को आतुर हुए।

साहित्यकार सर्वदा अपने साहित्यिक सफर में नवीनता लाने के लिए नव सृजन करते रहते हैं लोगों को पसंद आती है और वह विधा अपना ली जाती है, जिसका प्रचार प्रसार होकर आत्मसात कर लिया जाता है। चार, तीन, एवं दो शब्दों का समावेश प्रथम, द्वितीय तृतीया और अनिवार्य शब्द तृतीय पंक्ति में तुम्हारे लिए का प्रयोग करके सरल सुसज्जित सीधा शब्दों को जोड़कर हम नव रचनाकारी विधा को विश्व विख्यात कर रहे हैं। जीवन में रस भरती यह लघु विधा कम समय में रचनाकारों की अभिव्यक्ति में सहयोग कर आनंदवर्धक साबित हुई है। आज यह विधा साहित्यकारों में अपनी पहचान के साथ प्रेरक साबित हो रही है। आगामी दिनों में सबकी लाड़ली विधा साबित हो सकती है।

सरल सहज फायकू विधा
लेखकों की अभिव्यक्ति
तुम्हारे लिए।

-डॉ.पुष्पा सिंह

फायकू कविता पर विचार

सबसे पहले मैंने अनिल अभिव्यक्ति ग्रुप पर ही फायकू शब्द को देखा। मैंने हाइकू को तो सुना था लेकिन फायकू शब्द नहीं सुना था। मैंने सोचा था फायकू मतलब जैसे किसी भी विचार को फेंक देना और ऐसे सोचा था कि वह वैसे ही 'तुम्हारे लिए' शब्द लिखकर लिखवा रहे हैं तो मैंने तुम्हारे लिए की जगह पर अलग-अलग शब्द लिखकर १० फायकू भेज दिए तो अनिल जी ने बताया कि ये फाइकू नहीं है।

तो... मैं सोच में पड़ गई फिर से कोशिश की 'तुम्हारे लिए' शब्दों को लिखकर फाइकू लिखे तो वह सही थे।

रही बात फायकू कविता की मुझे लगता है वर्तमान आपधापी के युग में लंबी रचनाएं पढ़ने और लिखने के लिए समय निकालना आम लोगों के लिए बड़ा मुश्किल है। जो रचनाकार बहुत जल्दी-जल्दी कुछ करना और पाना चाहते हैं उनके लिए फायकू कविता बहुत अच्छी बात है क्योंकि इसे लिखना और पढ़ना आसान है लेकिन सिर्फ ९ शब्दों में

फायकू कविता को बांधना वही जानता है जो सच में सही रचनाकार हो, अपने भावों को कविता रूप में लिखना जानता हो।
आपने ग्रुप के सभी सदस्यों को फायकू लिखना सिखाया, इसके लिए अनिल जी आपका सादर आभार। सधन्यवाद..

-संतोष गर्ग 'तोषी'
पंचकूला

फायकू

फायकू एक ऐसी विधा है जिसके बारे में आज भी बहुत सारे लोगों को यहाँ तक की कई साहित्य प्रेमियों को भी इसकी जानकारी नहीं है। मैं भी इससे अछूता नहीं था, मुझे भी क्रमशः इसकी थोड़ी बहुत जानकारी होती गई। हाँ, अब मैं पूर्णतः अनभिज्ञ तो नहीं पर प्रकांड पंडित भी नहीं हूँ।
फायकू की जानकारी निश्चित रूप से पहली बार देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक मंच 'अनिल अभिव्यक्ति' से हुई थी। इस मंच के द्वारा विशेष अवसरों पर फायकू कविता विभिन्न कवियों से करवाती है और प्रेरित करती है फायकू लिखने को। फायकू लिखने के लिए गूगल से भी जानकारी प्राप्त की और 'ओपन डोर' के माध्यम से बहुत सारी जानकारी मिली। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि वर्तमान दौर में फायकू के प्रचार एवं प्रसार में सबसे अहम एवं सराहनीय योगदान 'अनिल अभिव्यक्ति' की ही है।
कई प्रकार की काव्य रचना यथा-दोहा, ग़ज़ल, गोरठा, वीर रस, हास्य रस, श्रृंगार रस, भक्ति रस की काव्य रचना इत्यादि की तरह फायकू की रचना/सृजन भी विभिन्न प्रकार के रसों से किया जा सकता है। मुझे विभिन्न अवसरों पर विभिन्न रसों के फायकू पढ़ने का सुअवसर मिला है। फायकू के पहली पंक्ति में चार शब्द, दूसरी पंक्ति में तीन शब्द एवं तीसरी पंक्ति में दो शब्दों का प्रयोग होता है या अन्य शब्दों में कहा जाए तो मुझे अब तक इसी प्रकार के फायकू देखने का अवसर प्राप्त हुआ है।
फायकू में शब्दों का चयन और संयोजन एक कला है एवं इसकी महत्ता भी है। प्रत्येक फायकू में तीसरी पंक्ति में दिए गए दो शब्दों का दोहराव होता जाता है जो कि बहुत ही सुंदर प्रतीत होता है एवं ऐसा आभास होता है कि लिखे जा रहे फायकू स्वयं ही एक-दूसरे से श्रृंखलाबद्ध तरीके से जुड़ते जा रहे हैं। जो फायकू लिखने वाले कवियों को और भी ज्यादा से ज्यादा फायकू लिखने को मजबूर कर देता है।
मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि आने वाले समय में 'फायकू' नामक काव्य रचना स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी एवं जन-जन में यह काफी लोकप्रिय होगा।

-दिनेश कौशल
दरभंगा(बिहार)

फायकू कविता पर विचार

आदरणीय अमन कुमार त्यागी जी तथा डॉ. अनिल कुमार शर्मा जी द्वारा इस विधा से परिचय हुआ इससे पहले मैं इस विधा से नितांत अपरिचित थी। सरल और सहज इस विधा ने सभी को अतिशीघ्र अपने रंग में रंग लिया है। प्रथम पंक्ति में चार शवद, द्वितीय पंक्ति में तीन, तृतीय पंक्ति में दो शब्द तथा अन्तिम तृतीय पंक्ति में तुम्हारे लिए शब्द अनिवार्य होता है-
सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर।।
बिहारी जी का ये दोहा इस विधा को चरितार्थ करता प्रतीत होता है।
एक बात ये भी ध्यान रखने योग्य है कि अनिवार्य शब्द तुम्हारे लिए लिखते समय ऊपर की दो पंक्तियों से सम्बन्ध जरूर होना चाहिए। नहीं तो समर्पित शब्द तुम्हारे लिए निरर्थक और उपेक्षित सा महसूस होता है ।
नौ शबद और तीन पंक्तियों की ये विधा स्वयं में विशिष्टता लिए हुए है जिसमें काव्य के समस्त रसों और भावों को सरलता से प्रस्तुत किया जा सकता है।
सादर आभार प्रेषित करती हूँ आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी और डॉ. अनिल कुमार शर्मा जी का जिन्होंने इस विधा को विकसित करने के साथ साथ हम सभी को भी इस विधा से परिचित कराया।

हम हृदय से रहेंगे
सदा ही आभारी
तुम्हारे लिए

-विनीता चौरासिया
शाहजहाँ पुर उत्तर प्रदेश

फायकू कविता पर विचार

फायकू पर कभी कुछ लिख नहीं पायी प्रतियोगिता देखती थी पर आजकल साहित्य को समय काम दे पा रही हूँ। सोचा था इस बार होली पर जरूर कुछ पोस्ट करूंगी पर अन्तसमय तक नहीं लिख पायी। गूगल किया तो डॉ. अनिल शर्मा जी की कविता मिली जो फायकू विधा पर थी, कहपी करके रखा और कई बार पढ़ा। सोचा चलो तुम्हारे लिए अंतिम दो शब्द हैं कितना अच्छा है। आज जब फिर समूह में सबको विचार लिखते देखा तो हमने भी सोचा क्यों न एक प्रयास कर ही लिया जाय।

व्यक्त करें विचार आज
फायकू पर सब
तुम्हारे लिए।
हुड़दंग है चहु ओर
होली का त्यौहार
तुम्हारे लिए।
पहली बार लिखी आज
फायकू की पंक्ति
तुम्हारे लिए।
कविता दिवस पर कविता
लिखना हुआ साकार
तुम्हारे लिए।

-सरिता त्रिपाठी
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विश्व कविता दिवस पर लिख रही फायकू तुम्हारे लिए

हिंदी ऐसी भाषा है जो हमारे भारत देश का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदी भाषा के अंतर्गत कविता, लघुकथा, कहानी लिखना हमेशा से ही मेरी रुचि रही है। मैं कक्षा आठ से ही अपनी डायरी के पन्ने खोल न जाने किन विचारों में खो जाती।उन विचारों के अंतर्गत मेरी कलम अपने आप काले अक्षरों को लिखने लग जाती।
हालांकि मैं अंग्रेजी माध्यम से पढ़ी पर मेरी रुचि बचपन से ही हिंदी साहित्य में रही। मैंने बहुतसे लेख लिखे जो प्रकाशित हुए पर 'फायकू' से मैं अपरिचित थी। यह अत्यंत ही सुंदर लेखन है जिसमें 'तुम्हारे लिए' क्रमशः बार-बार आता है। मुझे इस लेखन के बारे में पहली बार 'अनिल अभिव्यक्ति' ग्रुप से पता चला जहां फायकू लिखने के लिए बोला गया। इस लेखन में पहली लाइन में 'चार शब्द' दूसरी लाइन में 'तीन शब्द' आते हैं फिर 'तुम्हारे लिए' जुड़ जाता है। इससे आपस में एक गहरा संबंध विस्थापित होता है।
जैसे-

मैं अभिव्यक्त करूं विचार

कविता फायकू द्वारा
तुम्हारे लिए

'फायकू' लेखन से अपरिचित जब मैंने अनिल सर से पूछा तब उन्होंने मुझे बताया कि फायकू कैसे लिखते हैं।

यह लेखन एक ऐसा लेखन है जिसे हम गुनगुना सकते हैं, हास्य में भी प्रस्तुत कर सकते हैं। इस लेखन में 'तुम्हारे लिए' वाक्य सामने वाले के लिए समर्पित है।

मैंने फायकू पर अब तक कई रचनाएं लिखी हैं जैसे होली पर फायकू, शिवरात्रि पर फायकू इत्यादि जो प्रकाशित भी हुए हैं। इस लेखन की जानकारी होना उत्साहपूर्ण है। व व्यक्तिगत मुझे प्रिय लगा।

मैं आगे भी इस विधा पर लिखना पसंद करूंगी।

अंत में कहना चाहूंगी कि-

अनिल सर द्वारा फायकू
कवियों में प्रचलित
तुम्हारे लिए।
कवि लिख रहे फायकू
देते संदेश विभिन्न
तुम्हारे लिए।

-डॉ प्रिया
अयोध्या

कविता दिवस फायकू पर मेरे विचार

विश्व अंतर्राष्ट्रीय कविता दिवस की सभी को हार्दिक बधाइयां, हिंदी साहित्य जगत में अनेक महत्त्व पूर्ण विधाएं हैं। लेकिन सबसे नवीन विधा 'फायकू' जिसका मैंने कभी नाम भी नहीं सुना, अनिल अभिव्यक्ति मंच से जुड़ने पर ही मुझे जानकारी मिली। इस विधा के जनक आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी है जिन्होंने साहित्य में हम सब की पहचान करवाई। और डॉ, आदरणीय अनिल कुमार जी अनिल ने इसे बहुत ही सुसज्जित किया है। दोनों ही विद्वानों का हृदय से अभिनंदन। छोटी सी विधा मगर सीधी-साधी बात कहने और समझने में बहुत ही सरल। इस विधा में कम शब्दों में अपनी बात को सुगमता से कह सकते हैं। नौ शब्दों की सुंदर व्यवस्था जिसमें प्रथम लाईन में चार, दूसरी लाईन में तीन और तीसरी लाईन में 'तुम्हारे लिए' सुसज्जित शब्द है। आदरणीय डॉक्टर अनिल जी ने हम सभी रचनाकारों को बहुत ही प्रोत्साहित किया है। समय-समय पर सामयिक विषय देकर अनिल अभिव्यक्ति पटल को सजाया और संवारा है। सीप में मोती की जैसे कीमत होती है ठीक उसी तरह 'फायकू' विधा की साहित्य जगत में कीमत स्थापित हुई है। आज के इस भाग दौड़ के युग में किसी को पढ़ने की फुर्सत नहीं है। कम शब्दों में पढ़ना लोगों की चाहत बन गई। जिसमें यह 'फायकू' विधा बिल्कुल सटीक साबित हुई है। हम रचनाकारों को भी इस विधा को लिखने में बहुत आनंद आता है। भविष्य में यह विधा हिंदी साहित्य के विश्व पटल पर स्वर्णाक्षरों में अंकित होगी।

फायकू विधा का ज्ञान
लघु बनी महान्
तुम्हारे लिए
गया लोगों का ध्यान
चढ़ी मंजिल, सोपान
तुम्हारे लिए

-कनक पारख
विशाखापट्टनम

फायकू लेखन है आसान

कवि/साहित्यकार की उर्जा तब ही बढ़ती है जब नयी विधा, नये विषय पर लेखनी चलती रहे।

एक नयी विधा फायकू से परिचय कराने के लिए फायकू विधा के जनक आदरणीय अमन कुमार त्यागी जी एवं इस विधा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए डॉ. अनिल शर्मा जी 'अनिल' का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहना चाहूँगा कि फायकू कम शब्दों में सम्पूर्ण कथ्य एवं समर्पण भावों को व्यक्त करने का अत्युत्तम माध्यम है। फायकू विधा का सबसे पहले वर्ष-१६१२ में साहित्यिक जगत से परिचय हुआ। विगत लगभग दस-ग्यारह वर्षों से फायकू लेखन-पठन की यात्रा अनवरत रूप से जारी रही। कुछ समय पूर्व ही अनिल अभिव्यक्ति वाट्सएप समूह द्वारा इस विधा के विषय में जागरुकता उत्पन्न की गयी, फिर क्या था.....सैकड़ों रचनाकार फायकू लेखन में सिद्धहस्त हो गये अथवा हो रहे हैं।

फायकू वर्ण अथवा मात्रा की सीमा में नहीं बँधता अपितु चार-तीन-दो अर्थात् कुल नौ शब्दों की कविता है। जिसकी प्रथम पंक्ति में चार, द्वितीय में तीन तथा तीसरी और अंतिम पंक्ति में अनिवार्य दो शब्द तुम्हारे लिए से मिलकर काव्य रचना किसी भी विषय पर सर्जन करना अत्यन्त सरल है। अनिल अभिव्यक्ति पटल से जुड़े संभवतः सभी फायकू रचनाकारों ने प्रथम प्रयास में ही अति उत्तम फायकू लिखकर इस विधा की सरलता-सहजता को दर्शाया है।

फायकू की तीसरी पंक्ति के अनिवार्य शब्द तुम्हारे लिए, जो समर्पण को दर्शाते हैं, से ऊपर की द्वितीय पंक्ति के भाव से मिलना सार्थक फायकू सर्जित करता है।

माँ शारदे के प्रति समर्पित एक उदाहरण देखिए..

शारदे! नित शीश झुकाऊँ,
पूजा थाली सजाऊँ,
तुम्हारे लिए
स्वयं को अर्पण करता,
मन-श्रद्धा धरता,
तुम्हारे लिए

निष्कर्षतः यह कहना चाहूँगा कि फायकू विधा रचनाकार के मनोभाव को श्रोता/पाठक के मन-मस्तिष्क में अंकित करने में पूर्णतः सक्षम है। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि यदि रचनाकार फायकू की पहली और द्वितीय पंक्ति को समतुकांत रखें तो सोने में सुहागा हो जाएगा।

समतुकांत का रखो ध्यान
फायकू लेखन आसान
तुम्हारे लिए

-सत्येन्द्र शर्मा 'तरंग'
देहरादून

विश्व कविता दिवस

विश्व कविता दिवस पर
कहेंगे खरी खर
तुम्हारे लिए
कुछ शब्दों में फायकू
पैगाम है फायकू
तुम्हारे लिए
कविता दिवस पर आज
मत करिए लाज
तुम्हारे लिए
भावों की सुंदर अभिव्यक्ति
कविताई की शक्ति
तुम्हारे लिए
कुल शब्द संख्या नौ
भाव पूरे सौ
तुम्हारे लिए
जैसे आई अपनी होली
कवित्त सार बोली
तुम्हारे लिए
लिखें अपने सुंदर भाव
मूछ देकर ताव
तुम्हारे लिए

उपरोक्त कतिपय छंद, जो बहुत दिनों थे बंद। आया जबसे फायकू, सब बोले कायकू कायकू? सचमुच आज विश्व कविता दिवस पर फायकू पर रचना करना बेहद आसान लग रहा है। मैंने इससे पूर्व कभी फायकू में रचना नहीं की थी, पर धन्य है अनिल अभिव्यक्ति और इसके महान संचालक भाई डाक्टर अनिल शर्मा जी। इन्होंने फायकू का ऐसा प्रवाह चलाया कि आज फायकू विधा की बाढ़ आ गई। इसमें और कुछ हो या न हो, पर आपके भाव-विचार को बाँधने की सामर्थ्य है। कम शब्दों में बड़ी बातें आसानी से कही जा सकती है। जैसे आज के जमाने में क्रिकेट टेस्ट मैच न चलकर फिफ्टी-फिफ्टी और अब ट्वेंटी-ट्वेंटी चल रहा है। वैसे ही काव्य जगत में यह नई विधा हाइकू और फायकू लिया जा सकता है। मैं जब इसकी पड़ताल करता हूँ तो इसके जनक आदरणीय अमन कुमार त्यागी का नाम आता है। इसके विश्लेषण में और कई अन्य आधुनिक उपनामों का पता ब्रिटेन और आयरलैंड से लगता है। किंतु यहाँ जब हम 'फायकू' नाम से साहित्य की एक नई विधा को जान रहे हैं। तो यह विधा सन् २०१२ में नजीबाबाद से फेसबुक के माध्यम से अवतरित हुई जान पड़ती है और जंगल की आग की तरह फैल गयी। साहित्य की सभी परिभाषाओं से पूर्ण फायकू कभी कभी हाईकू का भ्रम पैदा करता है, पर ऐसा नहीं है। फायकू का शब्दार्थ इसके विच्छेद फाय में मिला अर्थात तलछट, जो (जमीन से मिला हुआ) है।

आयरिश लोग अपने नाम के बाद फायकू शब्द का प्रयोग करते हैं। आयरिश भाषा में फायकू का मतलब 'उड़ाने के लिए, हवा' है। उतना ही उड़ना जिससे जमीन पर वापिस आने में कोई कष्ट न हो। यहीं से प्रेरित होकर फायकू को 'समर्पण' का प्रतीक मानते हुए रचना की गई है। शायद इसीलिए इसमें अनिवार्य तीसरी पंक्ति तुम्हारे लिए प्रयोग की जाती है। इसके साथ इसमें मात्र तीन पंक्तियों का प्रावधान रखा गया है। यह तीन पंक्तियाँ तीन लोकों के बिम्ब का आधार मानी जाती हैं।

परन्तु आज के संदर्भ में डाक्टर अनिल शर्मा द्वारा उनके पटल पर चलाए गए अभियानिक गतिविधि काफी समृद्ध हुआ है। अतः इसके सतत अभ्यास की प्रेरणा के लिए डाक्टर शर्मा जी को बहुत बहुत बधाई और धन्यवाद।

- पंडित राकेश मालवीय मुस्कान
प्रयागराज

कविता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

लिख डाले मैंने विचार
विधा फायकू सार
तुम्हारे लिए
अनिल अभिव्यक्ति मंच को
करती हूँ नमन
तुम्हारे लिए
जिसने कराया परिचित फायकू
उसका है आभार
तुम्हारे लिए
नौ शब्दों का सार
चार तीन दो
तुम्हारे लिए
कविता दिवस की शुभकामना
प्रत्येक कवि संग
तुम्हारे लिए
शब्द कवि का संसार
असीमित रूप अपार
तुम्हारे लिए
फायकू है नयी विधा
देती नयी दिशा
तुम्हारे लिए
फायकू से लेखन निखरा
मोती मानो बिखरा
तुम्हारे लिए
छोटी बहन है फायकू
बड़ा भाई हायकू
तुम्हारे लिए
नवविधा का फैले प्रकाश
गूंजे धरती आकाश
तुम्हारे लिए
शब्दों का अथाह अम्बार
कल्पना का भंडार
तुम्हारे लिए

उपरोक्त छंद में मेरे मन के भाव है जो मैंने फायकू के लिए, फायकू विधा में लिख डाले। हाल ही में मैं इस विधा से परिचित हुई हूँ और सच कहूँ तो बेहद रोमांचक लगता है इस विधा में लिखना। मन के भावों को शब्दों में समा देना ही तो कवि का कर्तव्य है और फायकू विधा तो और भी अनूठी है। मैं हृदय से आभारी हूँ इस विधा के जनक आदरणीय अमन कुमार त्यागी जी और इस विधा को लेकर जो कारवाँ चलाया है डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' जी की। आशा करूंगी कि आगे भी ये कारवाँ चलता रहे और जन जन तक साहित्य का प्रकाश पहुंचे।

-निकेता पाहुजा
रुद्रपुर उत्तराखंड

मनपसंद विधा बन चुका है फायकू

मनपसंद सृजकों की बनी
फायकू विधा निराली
तुम्हारे लिए

कलम चलाते जानिए, पाते सरल विधान।
चार तीन दो पर लिखें, भाव बने पहचान।।
भाव बने पहचान, फायकू शब्द सजाते।
भरे हृदय उत्साह, सृजक नित कलम चलाते।।

हमारे महान भारत के आर्ष साहित्य शास्त्र का पूरा विश्व साक्ष्य है। कि कैसे आदि महाकवियों, आचार्यों ने अपना विधा विधान दिया है।, जो कालजयी वंदनीय है। वैदिक काल से लेकर लेखन की महती परंपरा ने निरंतर अपनी ओर आकृष्ट किया है। इसी श्रेणी में एक नवीन विधा फायकू है। जो हम सभी साहित्यकारों व पाठकों के बीच रोचक मनमोहक बना हुआ है।

साहित्यकारों की मनपसंद विधा बन चुका है फायकू पर सभी नव सृजन करते रहते हैं इसका प्रचार प्रसार जोर शोर से हो रहा है कारण सरल, सहज व लघु विधा जो नवांकुर को भी उत्साहित करती है अपने भावों को पिरोने पर यह विधा - शब्दों के समावेश से बनती है अनिल अभिव्यक्ति मंच से इसे लिखने का हूनर जाना।

जैसे प्रथम-चार द्वितीय-तीन तृतीया -दो जिसमें अनिवार्य शब्द - तुम्हारे लिए का प्रयोग होता है शब्दों को जोड़कर नवीन विधा का जन्म होता है घ जिसे फायकू कहते हैं। सभी लोगों के बीच इस विधा में लिखने का जोश निरंतर बढ़ता दिखाई दे रहा छोटी किंतु भावों के सटीकता शब्दों का पूरक हैं फायकू।

निश्चित ही भविष्य में कालजयी होगी यह विधा सादर शुभकामनाएँ।

-योगिता चौरसिया 'प्रेमा'
मंडला म.प्र.

अंतर्राष्ट्रीय कविता दिवस पर फायकू पर विचार तुम्हारे लिए

फायकू हिंदी साहित्य की एक नवीन विधा है। यह अपनी बात कहने का बहुत ही सरल, सहज, सरस

और सशक्त माध्यम है। एक साधारण व्यक्ति भी बड़ी सहजता के साथ फायकू की रचना कर सकता है। हास्य, व्यंग्य शृंगार, समसामयिक घटना, तीज त्यौहार सभी कुछ फायकू विधा में लिख सकते हैं।फायकू की प्रथम पंक्ति में चार शब्द, द्वितीय पंक्ति में तीन शब्द तथा अंतिम पंक्ति में दो शब्द 'तुम्हारे लिए' अनिवार्य हैं। यह 'तुम्हारे लिए' शब्द त्याग और समर्पण के भाव का द्योतक है। 'तुम्हारे लिए' शब्द उपरोक्त दोनों पंक्तियों को एक सूत्र में पिरोये हुए है। फायकू कविता का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। बहुत कम समय में ही यह जन-जन में बहुत प्रचलित हो गई है। श्री अमन कुमार त्यागी जी एवं श्री अनिल शर्मा 'अनिल' जी का हार्दिक आभार जिनके द्वारा इस नई विधा से मेरा साक्षात्कार हुआ। ओपन डोर पत्रिका तथा अनिल अभिव्यक्ति मंच पर नववर्ष, सोशल मीडिया का प्रभाव बच्चों पर, किन्नर, सुरंग में फंसे मजदूरों की सकुशल वापसी, शिवरात्रि, मकर संक्रांति, करवाचौथ, होली आदि अनेक ज्वलंत विषयों पर फायकू विधा की रचनाओं का लेखन एवं प्रकाशन हुआ है। जिससे हमारे जैसे नवोदित रचनाकार इस विधा में कुशलता और निपुणता से अपनी रचनाओं को अभिव्यक्त कर रहे हैं और जन-जन तक अपनी बात पहुंचाने में सक्षम हो रहे हैं।

अनिलजी त्यागीजी की प्रेरणा
रचे हमने फायकू
तुम्हारे लिए
मन की कही-अनकही
भावना है कविता
तुम्हारे लिए

-लक्ष्मी सिंह
जलालाबाद शाहजहांपुर

फायकू पर विचार

आज फायकू पर प्रस्तुत हैं मेरे भी कुछ विचार। चूंकि नयापन सभी के लिए आकर्षण का विषय होता है और फायकू साहित्य रूप में एक नई विधा है जिससे कम शब्दों में अधिक भावभिव्यक्ति संभव हो पाती है। और इसका अंतिम समापन, तुम्हारे लिए, से जब होता है तो यह समाज से जुड़ जाता है साहित्य की यह नवीन विधा वास्तव में कम शब्दों में अधिक कहने की कला है, और इसके लिए अमन त्यागी जी अनिल शर्मा अनिल जी निसंदेह बधाई के पात्र हैं जिन्होंने स्थापित करने और इसको आगे बढ़ाने में सक्रिय योगदान दिया है। प्रेरणा उत्साह वर्धन के माध्यम से यह विधा उत्तरोत्तर प्रगति पर है। फायकू वह रचनात्मक कौशल है जिसे बहुत सहज भाव से हम सबने अपना लिया है और कोई भी विषय हो सहज भाव से भावों की अभिव्यक्ति साहित्यकार दे रहे हैं अतः साहित्यकार भी इस विधा के संवर्धन में सहयोगी बनकर बधाई के पात्र हैं फायकू कायकू जब कहा जाता है तो ऐसे प्रश्नों के उत्तर इस विचार मंच से आज सबको उपलब्ध हो जाएंगे और नवीन जानकारी भी इस संदर्भ में प्राप्त होगी इसके लिए बधाई है अनिल अभिव्यक्ति ई पत्रिका के सम्पादक जी को जिन्होंने इसे आज सबको इस मंच से जोड़ा है। नवीन जानकारी नवीन विचार नवीन विधा से परिचय कर है सब लाभान्वित होंगे। इसका भविष्य उज्जवल है। हम सब इस विधा को निरन्तर प्रयास कर आगे बढ़ाने में सक्रिय रहे। ऐसी आकांक्षा के साथ आभार अनिल अभिव्यक्ति ...

-प्रो पूनम चौहान
एसबीडी महिला महाविद्यालय धामपुर, बिजनौर उत्तर प्रदेश

नमन अनिल अभिव्यक्ति मंच

आदिकाल से कविता की तमाम विधाएँ विकसित हुईं और अभी भी उनका विकास चल रहा है। कहा जाता है कि काव्य विधा में दोहा किसी भी बात की अभिव्यक्ति का सबसे सरल और सशक्त माध्यम है, बिल्कुल सही है लेकिन बाद में विकसित होते हुए दोहा ग़ज़ल, दोहा मुक्तक तथा दोहा गीत भी लिखे जाने लगे और आज भी खूब प्रचलित हैं। कविता के विकास के दौर में हायकू के बाद फायकू का आना बहुत अच्छा है। जो रचनाकार छंदबद्ध तरीके से नहीं लिख सकते हैं वे फायकू विधा में आसानी से लिख सकते हैं। इसमें भी शब्द, शिल्प और सौन्दर्य झलकता है। प्रथम चरण में चार, द्वितीय चरण में तीन तथा तृतीय चरण में दो स्थायी शब्द 'तुम्हारे लिए' हमेशा तैयार मिलेंगे। इसके जन्मदाता अमन कुमार त्यागी और प्रसारक डॉ. अनिल कुमार जी बड़ी लगन से इसे आगे बढ़ा रहे हैं। आज विश्व कविता दिवस पर अपने विचार व्यक्त करने का उनका फैसला सही है स तो देर किस बात की आप सभी खूब पढ़ें और फिर लिखें तथा आनन्द लें हर फायकू का स साथ में...

है फायकू लिखना आसान
अभिव्यक्ति बने महान
तुम्हारे लिए

-ईश्वर चंद्र जायसवाल
संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश)

एक विचार

हिंदी भाषा में अनेक प्रकार के विषय हैं जो गद्य और पद्य में बड़ी आसानी से प्रयोग में लाते हैं वह चाहे गीत, कविता, मुक्तक, हिंदी ग़ज़ल आदि क्यों न हों एक भाषा जापानी भाषा की हाइकू विधा भी प्रचलित है जिसका आजकल बहुत मात्रा मैं प्रयोग हो रहा है।

वहीं इन सबसे इतर एक नई विधा का उदय हुआ है। अमन जी व डॉ. अनिल जी के माध्यम से हुआ है और वह विधा है फायकू यह बहुत ही सरल है कम शब्दों में बहुत बड़ी बात कही जाती है। इसमें तीन पंक्तियां होती हैं प्रथम पंक्ति में ४ शब्द दूसरी में ३ और तीसरी में २ लेकिन अंतिम पंक्ति में तुम्हारे लिए होना आवश्यक है यहीं इस विधा की विशेषता है।

चलो हम सब पढ़ेंगे
हिंदी को अपनाएंगे
तुम्हारे लिए

अनिल जी को हृदय से बधाई साथ ही अमन जी को भी।

-अशोक विश्नोई

फायकू पर विचार

फायकू विधा एक ऐसी विधा है जिसमें हर कोई अपने मन के विचारों को कम शब्दों में पूरी कर देता है होना भी चाहिए कि हम किन्हीं चंद पंक्तियों में अपनी बात को कहने में सक्षम होने चाहिए धन्यवाद करते हैं फायकू के जनक अमन त्यागी जी और फायकू को भरपूर सम्मान तक पहुंचाने के लिए डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' जी का कि उन्होंने इस विधा को उजागर किया और सभी के लिए एक चुनौती खड़ी कर दी। हायकू, मुक्तक जैसी विधा को सब ने रचा भी है सुना भी आज अधिकांश साहित्यकार भी फायकू को रचने लगे हैं फायकू नये-नये विषयों में भी रचने का प्रयास किया जा रहा है फायकू को रचना जितना कठिन है उतना ही आसान भी पहली पंक्ति में चार शब्द दूसरी पंक्ति में तीन शब्द तीसरी और आखीरी पंक्ति में दो शब्द तुम्हारे लिए कहना अनिवार्य है। जो हर एक शब्द का समर्पण दर्शाता है और गागर में सागर भर देता है फायकू एक ऐसी भी विधा है जिसने कभी कोई कविता ना की हो वो भी इसको रच सकता है।

सबका एक है विचार
फायकू रचेंगे हजार

तुम्हारे लिए।

-अक्षि त्यागी

भविष्य की प्रखर विधा है फायकू

नवोन्मेष जीवन का में गति एवं नवीनता का प्रतीक है। यदि समय-समय पर कुछ नया जीवन में न घटित हो तो जीवन एकरस हो जाता है और उसमें एक नीरसता आ जाती है। यह बात कविता पर भी पूरी तरह लागू होती है।

कविता में भी समय-समय पर अनेकानेक प्रयोग होते रहे हैं। कभी रस तो कभी छंद, कभी अलंकार तो कभी बिंब तो कभी प्रतीक या उपमेय और उपमानों के साथ प्रयोग होते रहे हैं और इस प्रयोगधर्मिता के कारण ही कविता समय-समय पर पुष्पित पल्लवित हुई है।

हालांकि जब लंबे समय से चली आ रही कोई परंपरा टूटती है तो उस पर कभी वेदना तो कभी आक्रोश भरे स्वर भी उठते रहे हैं। यदि हिंदी कविता पर एक दृष्टि डाली जाए तो वियोग से शुरू होने वाली यह विधा समय के साथ संयोग, मिलन, रति, आक्रोश, शृंगार, सृजन, विसर्जन हास्य, रुदन, करुणा और निरीहता जैसे कितने ही भावों को अपने साथ लेकर आगे बढ़ी है। कभी छंद विधान का पालन कठोरता से किया गया तो कभी छंद मुक्त कविता पर रचनाकार मोहित हुए अस्तु कुछ भी हुआ हो और कैसे भी हुआ हो इन सबसे कविता का भला हुआ हो या ना हुआ हो लेकिन कविता आगे बढ़ी है।

पिछले १० वर्ष में एक नई विधा के रूप में फायकू ने भी कविता के क्षेत्र में प्रवेश किया है। फायकू के समर्थकों का मानना है कि यदि कोई छंद या फिर सुर लय और ताल में पारंगत नहीं है तो उसे भी अपने भावों की अभिव्यक्ति का काव्य के माध्यम से अधिकार है और छंद मुक्त कविता या नई कविता अथवा प्रायोगिक कविता की तरह ही फायकू इसमें उसकी मदद करता है। एक दृष्टि से देखने पर जापान का हाइकू फायकू से तुकबंदी करता नजर आता है और किसी हद तक दोनों में काफी साम्य भी है लेकिन फायकू को हाइकू का ही दूसरा रूप मान लेना सही नहीं है क्योंकि दोनों विधाओं की अपनी विशेषताएं हैं। अभी यह विधा साहित्य के क्षेत्र में एक नवजात शिशु की तरह है और उसका कैसे विकास होगा, कहां तक जाएगी, किस प्रकार से उसका भी विकसन एवं पल्लवन होगा तथा उसकी कितनी उम्र होगी का नहीं जा सकता। पर एक बात तो तय है कि फायकू कितने ही ने पुराने रचनाकारों को अपनी ओर न केवल आकृष्ट करेगा अपितु उनमें नई रचनाधर्मिता का संचार भी करेगा।

आने वाले समय में जब-जब भी फायकू विधा का जिक्र होगा तो ओपन डोर के प्रकाशक, संपादक एवं रचनाकार अमन त्यागी तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी, शिक्षक रचनाकार एवं अनिल अभिव्यक्ति के संस्थापक अनिल शर्मा 'अनिल' का नाम जरूर लिया जाएगा। इन दोनों सृजनहारों ने इस विधा के विकास हेतु निसंदेह अथक परिश्रम किया है तथा नए रचनाकारों को इसे अपनाने के लिए प्रेरित भी किया है।

अस्तु, आज विश्व कविता दिवस के अवसर पर कविता परिवार में फायकू का स्वागत है तथा साथ ही साथ उसके उन्नयन प्रगति विकास एवं पल्लवन की शुभकामनाएं हैं।

-डॉ. घनश्याम बादल, रुड़की

फायकू विधा पर मेरे विचार

फायकू विधा बहुत सुंदर विधा है, जिसमें कम शब्दों में असीमित भावों को सृजित किया जाता है। इस विधा को मैंने पहली बार अनिल अभिव्यक्ति मंच पर ही पढ़ा और सुना। इस विधा के माध्यम से हमें अपने भावों को अभिव्यक्त करने की नई विधा की जानकारी मिली। जिसके अंतर्गत प्रथम पंक्ति में चार शब्द, द्वितीय पंक्ति में तीन शब्द, और तृतीय पंक्ति में दो अनिवार्य शब्द तुम्हारे लिए प्रयोग किए जाते हैं। मैंने भी बहुत से आयोजनों पर फायकू लिखे। कुछ समय पर ना भेज पाने के कारण प्रस्तुत नहीं कर पाई। लेकिन कुछ प्रस्तुत भी किये जिसके लिए मुझे सम्मानित भी किया गया। फायकू विधा में लिखना ही अपने आप में सुंदर भाव जागृत कर जाता है। बहुत से अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय मंचों पर भी मैंने फायकू विधा में रचनाएं ऑनलाइन प्रस्तुति दी है।

जिसके लिए सभी ने इस नई विधा की जानकारी को सुनकर अनिल अभिव्यक्ति मंच की बहुत प्रशंसा की है। मैं सदैव अनिल अभिव्यक्ति मंच की आभारी हूं कि उन्होंने इतनी सुंदर आयोजन में मुझे सीखने और बोलने का अवसर दिया। आपके लिए और आपकी सुंदर विधा के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद आभार।

-ज्योतिराज मधुरिमा

धामपुर, बिजनौर उत्तर प्रदेश भारत

फायकू एक सरल, सहज, रोचक कविता की विधा है

आज २१ मार्च का दिन विश्व कविता दिवस को समर्पित है। संस्कृत से जन्मी हमारी मातृभाषा हिंदी का साहित्य आज विश्व स्तर पर अपना कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। हिंदी का साहित्य बहुत विस्तृत है जिसमें मुख्य रूप से दो विधाएं गद्य और पद्य में विभिन्न भावों और विचारों की रसात्मक अभिव्यक्ति हुई है।

आज विश्व कविता दिवस के उपलक्ष में हम काव्य विधा पर प्रकाश डालेंगे हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर वर्तमान युग तक नई कविता ने कविता के विभिन्न उपयोग देखें हैं, यथा- दोहा, छंद, कुंडलिया, चौपाई, सवैया, सोरठा, गीत, अतुकांत कविताएं, हाइकु इत्यादि।

आज भावों का मात्रिक दर्शन गीत की पद्यात्मक लयात्मकता प्रायः न्यूनतम हो रही है। आज की व्यस्ततम जिंदगी जीवन के हर क्षेत्र में शॉर्टकट अपना रही है परंतु इस स्थिति का भी अपना एक अलग महत्व और दर्शन है। कविता के क्षेत्र में एक नवीनतम विद्या फायकू ने जन्म लिया है और लगभग १० वर्षों से उसने अपना शैशव से बचपन तक स्वतंत्रता के साथ व्यतीत किया है। फायकू एक सरल, सहज, रोचक कविता की विधा है जिसके अंतर्गत तीन पंक्तियां होती हैं जिसमें प्रथम पंक्ति में चार शब्द, द्वितीय पंक्ति में तीन शब्द और अंतिम पंक्ति में दो शब्द जो की हमेशा हर फायकू में 'तुम्हारे लिए' आना अनिवार्य होता है। यह तीन पंक्तियों के शब्द ब्रह्मा विष्णु महेश के प्रतीक लगते हैं जो की एक समर्पण का भाव प्रभु के प्रति दर्शाते हैं। अंतिम पंक्ति तो वास्तव में अहमन्यता से दूर करती है।

डॉ. अनिल शर्मा अनिल के अभिव्यक्ति मंच पर हमने Open Door पत्रिका के संपादक मान्यवर अमन त्यागी द्वारा प्रेषित ई फायकू विशेषांक पर विस्तृत सामग्री का पठन करने के उपरांत नवंबर २३ से लिखना प्रारंभ किया। हमें लेखन में सहज और विशेष रसात्मकता की अनुभूति हुई। फायकू विद्या का भविष्य उज्जवल है। 'अभिव्यक्ति मंच' के संपादक डॉक्टर अनिल शर्मा अनिल जी एक सशक्त हस्ताक्षर हैं साहित्य जगत के। उनके और अमन त्यागी जो शोध के आदर्श भी हैं, दोनों साहित्यकारों के लिए फायकू विद्या के प्रचार और प्रसार के लिए नव नव साहित्यकारों को मार्गदर्शन और प्रेरणा देने के लिए बहुत-बहुत हार्दिक बधाइयां

और अनंत शुभकामनाएं देती हूं

-डॉ. रेखा सक्सेना
मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

भावों का प्रकटीकरण कम शब्दों में फायकू द्वारा किया जा सकता है

फायकू बिल्कुल नयी विधा है। फायकू का आकार नये विचारों को बहुत अच्छी प्रकार से संयोजित करता है। किसी भी विषय को बहुत सरलता पूर्वक फायकू में माला की भांति पिरो सकते हैं क्योंकि यह विधा स्वयं में सम्पूर्ण और समर्थ है। भावों का प्रकटीकरण कम शब्दों में फायकू द्वारा किया जा सकता है। चाहे मौसम की बात हो, उत्सवों का शाब्दिक आयोजन हो या राजनीति और अर्थव्यवस्था की बात हो फायकू द्वारा सफलता से व्यक्त होती है। फायकू विधा में कविता रचना आनन्ददायक है। यह रस सिद्ध छंदमय रचना है। सबसे अच्छी बात ये है कि फायकू किसी भी विषय पर बहुत कम समय में लिखे जा सकते हैं। तुम्हारे लिए से फायकू की इति सुंदर और लयात्मक लगती है। यह अनूठे छंद विधान से अपनी निश्चित गति से चलती है सुंदर और प्रभावी ढंग से भावाभिव्यक्ति करती है। बहुत सुविधाजनक सूत्रात्मक रचना है फायकू। विश्व कविता दिवस पर विशेष धन्यवाद अभिव्यक्ति को फायकू रचना सिखाने हेतु।

-डॉ. वीना गर्ग
मुजफ्फरनगर

२१ मार्च २०२४, विश्व कविता दिवस

अनिल अभिव्यक्ति 'अनिल' के मंच पर नवीन और लघु विधा 'फायकू' पर आज शानदार विचाराभिव्यक्ति पढ़ने को मिल रही है। सभी ने खुले मन से न केवल इस को स्वीकारा है वरन् इसका स्वागत किया है। क्यों कि आज के व्यस्त जीवन में कम समय में पाठक को और रचनाकार को मानसिक संतुष्टि प्रदान करने की क्षमता संजो कर रखने में 'फायकू' पूर्णतः समर्थ है। यह कौतुहल से परिपूर्ण आधुनिक विधा है जिसको लिखने में भी आनंद आता है और पढ़ने मे भी।

ध्यान केवल यह रखना होता है कि अंत के दो शब्दों 'तुम्हारे लिए' से पूर्व पंक्तियों का तालमेल इस प्रकार बैठाया जाए कि अर्थ का अनर्थ ना हो सके।

फायकू से परिचय 'अनिल-अभिव्यक्ति' के मंच पर ही हुआ। अनिल जी के आमंत्रण पर ही विविध अवसरों पर फायकू लिखे जाते हैं। इस विधा के जनक 'अमन त्यागी जी' एवं इस को अभिसिंचित करने वाले अनिल शर्मा 'अनिल' जी के प्रयासों की यह विधा सदैव ऋणी रहेगी।

आप दोनों का योगदान नवीन साहित्य के संदर्भ में स्मरणीय रहेगा।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि 'फायकू' एलोपैथी की वह टैबलेट है जो साहित्य- प्रेमियों के मन मस्तिष्क को तुरंत प्रभावित करने में सक्षम है।

-विनोद शर्मा
धामपुर

मैं तो गदगद हो गई

पहली बार पटल पर सुना। मैं अचंभित थी आखिर यह विधा क्या है?

कई बार उसको समझती कई बार सोचती, आखिर किसने लिखा है। यह कहां से आई है, क्या इसका मकसद है।

मैं पटल पर जितने भी फायकू आते उनको पढ़ती, पढ़ने के बाद खुद लिखने का प्रयास करती। पटल के माध्यम से प्रयास थोड़े बहुत सफल रहे, खुशी तो होती मगर जिज्ञासा रहती किस विधा का असली हकदार कौन है। आज कविता दिवस पर सारे संदेह समाप्त हो गये, विशेष लेखकों द्वारा प्राप्त, हुआ, इस विधा का जनक हमारे ग्रुप के संरक्षक एवं संपादक जी, हमारे बीच रहने वाले विशेष व्यक्ति श्री डॉ. अनिल जी एवं अमन त्यागी जी हैं। मैं तो गदगद हो गई, अरे! मैं जिस विधा को दुनिया में ढूंढ रही थी, वह तो मेरे साहित्यक परिवार के मुखिया जी हैं, पहले समझ ही नहीं आता था, कि नाम किसने दे दिया। गूगल पर कई बार सर्च किया कि कहीं इसका कोई अर्थ मिल जाए उसे अर्थ नहीं मिला फिर मैं अपने जो लेखक साथी है उनसे फोन करती फिर पूछती कि यह क्या है सब यह कहकर संत्वना, दे देते की पहली लाइन में चार शब्द, दूसरी लाइन में तीन शब्द, और अंतिम वाली लाइन में तुम्हारे लिए आना अनिवार्य है। यह एक नई विधा है फायकू जो मैंने अनिल अभिव्यक्त जी के मंच से सीखी है, तो मैं उनको जवाब दे देती सच तो यही है मैं मंच पर देखा। लेकिन इसका इतिहास नहीं पड़ा। यह मेरी तमन्ना थी, आखिर आज मेरी तमन्ना पूरी हो गई बीच हमारे साहित्यकारों द्वारा विभिन्न प्रकार से इसकी परिभाषित किया गया इसके बाद डॉक्टर अनिल सर द्वारा एवं त्यागी जी के द्वारा विशेष ढंग से विस्तृत जानकारी दी गई उसका महत्व पता लगा इतना आनंद आया कि जैसे मैं किसी और लोक में आ गई हूं इतनी सरल सुहानी विद्या गजब की विधा जिसकी तुलना किसी और से करना बिल्कुल बेमानी होगी सच तो यह है यह विदा सहज सरल मनोरम हिंदी जगत को नया जीवन देने वाली जैसी है हर व्यक्ति अपने मन के भाव को बड़ी सरलता से सहजता से व्यक्त कर लेता है, इस विधा को जन्म देने वाले जनक, एवं सहयोगी साहित्यकारों को, बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं भी मैं तो यही कहूंगी आप हम सभी साहित्यकारों के दिलों में ऐसे ही राज करते रहो, और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी को अक्षुण्ण बनाने के लिए आपका विशेष योगदान है जो अतुलनीय है। विश्व कविता दिवस की पुनः सभी को ढेर सारी शुभकामनाएं और बधाइयां।

इस नई विधा से अवगत कराने के लिए और आज पूर्ण रूप से संतुष्ट, करने के लिए ग्रुप की संपादक और संरक्षक को कोटि-कोटि धन्यवाद और प्रणाम करती हूं।

-सीता त्रिवेदी (शाहजहांपुर)

फायकू पर विचार

कविता दिवस पर आप सभी को
हिंदी साहित्य भाषा की हार्दिक बधाई।

२१ मार्च कविता दिवस पर फायकू विधा पर विचार रखना कठिन है पर प्रयास अवश्य करना चाहूंगी,, सर्वप्रथम तो आपको अनूठी नई विधा से परिचय करवाने का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करती हूं।

तीन पंक्तियों में संपूर्ण साहित्यिक सार है। शब्दों की संरचना इस प्रकार है कि किसी भी विषय को लिखना है तो नौ शब्दों में कविता का अर्थ एवं कविता की खूबसूरती को बरकरार रखा जाता है। थोड़े में ज्यादा समझना इस विधा का सुंदर आयाम है जोकि हिन्दी साहित्य के जगत में दोहा छंद गीत चौपाई कुंडलियां की तरह आज के नये नोर्मल समाज में अपनी पहचान बनाने में कामयाब होगी।आज की भागम भाग लाइफ स्टाइल में जहां परिवार में स्त्री पुरुष दोनों ही काम काजी हैं तो न्यूनतम समय में भावों को समझना, लोगों के लिए एक प्रकार से उचित ही होगा।

हिंदी के साहित्यकार लेखक और कलमकार इस नवीन विधा के परिचायक सारथी बन नवीन पीढ़ी के कलमकारों का हौंसला बढ़ाने में सहायक बनेंगे। आदरणीय अमन त्यागी जी एवं अनिल शर्मा जी ने

फायकू विधा को हिंदी साहित्य जगत में रचनात्मक खोज कर इतिहास रच दिया है।

मेरा सौभाग्य है कि मैं अभिव्यक्ति मंच से जुड़ कर विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञानार्जन किया है। मैं आभार व्यक्त करती हूं।

आगे भी मार्गदर्शन दर्शन की अभिलाषा रखती हूं। हार्दिक बधाई एवं अनेकानेक शुभकामनाएं।

धन्यवाद

-रेनू बाला सिंह
गाजियाबाद

फायकू आसानी से समझ आ जाती है

आदरणीय अनिल जी,

लेट हो जाने के कारण मैंने भी अपने विचार प्रेषित नहीं किए थे। परंतु पटल पर प्रेषित कर रही हूं कृपया स्वीकार करें।

सर्वप्रथम तो इस नई फायकू विधा की जानकारी के लिए मैं आदरणीय डॉ. अनिल शर्मा जी एवं अमन त्यागी जी का धन्यवाद करती हूं।

इस नई विधा में कई संभावनाएं निहित हैं। संक्षेप में स्वयं के भावों की अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति विद्या को सुंदर स्वरूप प्रदान करती है।

प्रथम पंक्ति में चार शब्द द्वितीय में तीन शब्द तथा तृतीय पंक्ति में अनिवार्य दो शब्द 'तुम्हारे लिए' फायकू के सुंदर स्वरूप को दर्शाती हैं।

फायकू विद्या नवीनतम होने के साथ-साथ आसानी से समझ आ जाती है और नए कलमकारों को भी रचना के अवसर प्रदान करती है।

विधा अवश्य ही अपना स्वर्णिम स्थान बनाएगी। ऐसी कामना करती हूं।

फायकू के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करना बहुत अच्छा लगा। इस विधा का कई रचनाएं लिखने में प्रयोग कर चुकी हूं और भविष्य भी करती रहूंगी।

धन्यवाद।

अनंत शुभेच्छाओं के साथ

-मैत्री मेहरोत्रा 'मैत्री'

अन्तराष्ट्रीय कविता दिवस पर फायकू के उद्गार तुम्हारे लिए।

फायकू साहित्य जगत में एक नई विधा है, जिसका उद्गम आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी साहित्यकार के कर कमल द्वारा हुआ। और फायकू विधा को भी नन्हे-नन्हे कदमों से उंगली पड़कर चलने के साथ साथ ही दौड़ना भी सिखाया अनिल अभिव्यक्ति ग्रुप के संपादक डॉ. अनिल कुमार शर्मा 'अनिल जी' ने।

फायकू- स्वस्थ सुंदर और मनभावन बालक स्वरूप की भांति सभी रचनाकारों को बहुत पसंद आया। तथा सभी कवियों ने प्रसन्नचित मन से इसे खूब खिलाया यानि अपनी लेखनी से हर विषय पर खूब लिखा। आदरणीय श्री अमन कुमार त्यागी जी 'फायकूकार' ने इस विधा को लिखने की सरल, आसान, सहज विधि सिखायी।

तीन पंक्ति में चार, दूसरे में तीन, और तीसरी में तुम्हारे लिए। दो शब्द लिखने में बहुत आनंद आता हैं। जाने अनजाने में कोई भी अपने मन की भावों को दूसरे के भावों से एकाएक जोड़ते हुए महसूस करते हैं।

जैसे सर्दी के फायकू
हमने भी बनाए
तुम्हारे लिए
होली की हार्दिक बधाई
हमजोली के संग
तुम्हारे लिए

यह विधा नवीनतम होने के साथ साथ नये कलमकारों के लिए भी लिखने का उत्कृष्ट माध्यम हैं।

फायकू नए कलमकारों के लिए बिल्कुल ऐसी विधा है जैसे- कोई बालक मोबाइल हाथ में आते ही पलक झपकते ही कार्य कर देता है और बड़े देखते ही रह जाते हैं सोचते ही रह जाते हैं। उसी प्रकार फायकू भी कम शब्दों में अधिक प्रभावी भी है-

फायकू है उत्कृष्ट विधा
डिजिटल दुनिया सी
तुम्हारे लिए

जब से फायकू विधा ने मेरे जीवन में अधिकार जमाया है तब से -

मन करता है कि
फायकू ही लिखूं
तुम्हारे लिए।

-रंजना हरित
बिजनौर उत्तर प्रदेश

फायकू विधा पर विचार

फायकू विधा से मैं बिलकुल अनजान थी, आदरणीय डॉ. अनिल जी शर्मा और त्यागी जी के अनिल अभिव्यक्ति मंच में मैं प्रथम बार इस विधा से परिचित हुई और प्रथम बार महाशिवरात्रि पर फायकू लिख कर इस अंक में अपनी जगह बनाई। मैं अमन त्यागी जी और डॉ. अनिल जी का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं कि उन्होंने फायकू विधा से परिचित करा कर हमारे ज्ञान में बढ़ोतरी करने का नेक काम इस मंच द्वारा किया है। फायकू विधा को विकसित करने और इस विधा से परिचित कराने का पूरा श्रेय इस मंच को देकर ये अपेक्षा करती हूं कि भविष्य में भी निरंतर नई नई विधाओं से परिचित करवा कर हमारे ज्ञान के भंडार में इजाफा करेंगे। मैं सभी साहित्यकारों को भी शुभकामनाए देती हूं कि वो अपना बेहतरीन सृजनात्मक साहित्य से इस मंच को अलंकृत करते रहेंगे।

अंत में एक बार फिर इस मंच को तथा आदरणीय दोनो विद्वानों को उनके सराहनीय कार्य की तहे दिल से मुबारकबाद देती हूं।

फायकू विधा निरंतर प्रख्यात होकर अपनी अलग पहचान बना कर बुलंदियों को छुए ये दुआ करती हूं।

रंगपंचमी पर फायकू रंग
साथ में बताशे भांग
तुम्हारे लिए

धन्यवाद

-महेजबीन मेहमूद राजानी
गोंदिया महाराष्ट्र

फायकू विधा

हिन्दी साहित्य की एक अभूतपूर्ण सुंदर विधा जिससे रचनाकारों का परिचय अभिव्यक्ति पटल के माध्यम से हुआ। प्रथम पंक्ति में चार, द्वितीय पंक्ति में तीन व तृतीय पंक्ति में तुम्हारे लिए! कुल मिलाकर ९ शब्दों की सार्थक रचना। अपने मनोभावों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम। कम शब्दों में सार गर्भित बात कहना गागर में सागर समाने बाली कहावत को चरितार्थ करता है। आज संचार माध्यम की त्वरित सुविधाओं से जानकारियों का प्रसार भी त्वरित है। रचनाकारों को नई विधा को समझने व रचना सृजन का सौभाग्य मिल रहा है, जिसके लिए अभिव्यक्ति मंच का हृदय से आभार प्रकट करना अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझती हूं।

हम सभी विद्वतजनों से सीखते चलें, साहित्य को समृद्ध करने में योगदान दें, यही कामना करती हूं।

- मीना जैन

फायकू पर फायकू में विचार

विश्व कविता दिवस पर फायकू

१
विश्व कविता दिवस भेजूं
साहित्यकारों को प्रणाम
तुम्हारे लिए
२
फायकूं विधा भाव समेटे
गागर में सागर
तुम्हारे लिए
३
अनिल अभिव्यक्ति मंच सृजनात्मक
फायकू बोध कराता
तुम्हारे लिए
४
सीमित शब्दों में असीमित
अभिव्यक्ति करना सिखाता
तुम्हारे लिए
५
नित नूतन पर्व मनाता
फायकू आनंद बिखरता
तुम्हारे लिए।
६
कभी महादेव को मनाता
शिवपार्वती विवाह दिखाता
तुम्हारे लिए
७
बेटी दिवस पर उत्सव
फायकू मंच मनाता
तुम्हारे लिए
८
भावों की झड़ी लगाता
उत्साहवर्धन सम्मान दिलाता
तुम्हारे लिए
९
सुंदर सृजन पर सुंदर
फायकूं सम्मान दिलाता
तुम्हारे लिए
१०
प्रत्येक रचनाकार की रचना
उचित मापदंड समीक्षा
तुम्हारे लिए
११
आधी अधूरी अनुचित क्रम
हो मिलें उपेक्षा
तुम्हारे लिए
१२
करो पुनः सृजन सुंदर
करें मांग मंच अपेक्षा
तुम्हारे लिए
१३
कई बार परिस्थिति वश
रह जाते प्रतिभागी
तुम्हारे लिए
१४
तब पुनः सृजन अवसर
देता नया विषय
तुम्हारे लिए
१५
पहली चार दूसरे तीन
अंतिम शब्द अनिवार्य
तुम्हारे लिए
१६
परिवार में उलझी भ्रमित
मुश्किल अवसर लेखन
तुम्हारे लिए
१७
मगर सुंदर आयोजन कैसे
विसराऊं अवसर लेखन
तुम्हारे लिए
१८
कीजिए समीक्षा दीजिए फटकार
लिखे कुछ फायकू
तुम्हारे लिए
१९
अपेक्षा सदैव स्नेह आशीर्वाद
मिले गुरु समान
तुम्हारे लिए
२०
करु नमन सदैव आभार
सुंदर विधा फायकू
तुम्हारे लिए
२१
मैं मूर्ख बालक अज्ञान
छोटी तृणमूल समान
तुम्हारे लिए

ज्योतिराज मधुरिमा
धामपुर बिजनौर उत्तर प्रदेश
भारत

कविता दिवस पर फायकू

१
कविता से पहला प्यार
शब्दों का अलंकार
तुम्हारे लिए
२
भावों का लावा पिघलता
कविता लेती आकार
तुम्हारे लिए
३
मन के भाव बदल रहै
कविता का रंगरूप
तुम्हारे लिए
४
करती तुमसे बेहद प्यार
शब्द लेते आकार
तुम्हारे लिए
५
भावुक मन कवि हदय
कविता मेरा प्यार
तुम्हारे लिए
६
अभिसार की मधुरिम बेला
लिखती मैं शृंगार
तुम्हारे लिए
७
भावों का ज्वार भाटा
लिखता भाव अनेक
तुम्हारे लिए
८
प्रेम करती हूं तुमसे
रचती प्रेम गीत
तुम्हारे लिए
९
कवियों का संसार निराला
भरते भाव प्याला
तुम्हारे लिए
१०
वियोगी हदय की पुकार
कविता का संसार
तुम्हारे लिए
११
मेरे मन पर अधिकार
कविता का शृंगार
तुम्हारे लिए
१२
फायकू विधा में लिखा
कविता दिवस आज
तुम्हारे लिए
१३
नई विधा सीख रही
शब्द संख्या मेल
तुम्हारे लिए
१४
अभिव्यक्ति का मंच मिला
फायकू विधा संज्ञान
तुम्हारे लिए
१५
गागर में सागर भरना
सीखी फायकू विधा
तुम्हारे लिए

सरोज दूगड़ 'सविता'
खारूपेटिया - असम

कविता दिवस की बधाई

कविता

१
कविता अनुभूति कराती हमें
मानवीय रिश्ते सारे
तुम्हारे लिए
२
नारी की सुंदरता दिखती
मन के भाव छूती
तुम्हारे लिए
३
शब्दों की माला पिरोती
एहसास जज्बात गूँथती
तुम्हारे लिए
४
अंतर्मन उदासीनता छलती कविता
सामाजिक चेतना जगाती
तुम्हारे लिए
५
स्वतंत्र आशादीप जलती कविता
वीरता शृंगार जताती
तुम्हारे लिए
६
पीड़ा बिरहा निर्भयता क्रूरता
हृदय संवाद कराती
तुम्हारे लिए
७
हृदय में भाव बरसाते
सोच उजागर करती
तुम्हारे लिए
८
मन के उड़ते पक्षी
शब्दों में बाँधती
तुम्हारे लिए
९
उन्मुक्त अनियंत्रित मर्म भेदती
रचना को आकार
तुम्हारे लिए
१०
कलम कागज पर मढ़ती
स्वच्छंदता एहसास कराती
तुम्हारे लिए

डॉ. पुष्पा सिंह

कविता की कहानी, फायकू की जुबानी

१
मैं कविता कवि की
भावों में बँधी
तुम्हारे लिए
२
बसी हूँ उसके ही
हर शब्द में
तुम्हारे लिए
३
है मुझमें जुदाई भी
और मिलन भी
तुम्हारे लिए
४
बसे हैं हजारों सपन
इस नयन में
तुम्हारे लिए
५
कभी वादे झूठे मैं
नेता के लिखती
तुम्हारे लिए
६
इरादे कभी अपने दृढ़
मन के कहती
तुम्हारे लिए
७
किया खुद को अर्पण
बनकर के दर्पण
तुम्हारे लिए
८
श्रवण मन से करना
कवियों को लाई
तुम्हारे लिए
९
दुनिया का हर रंग
मुझमें चढ़ा है
तुम्हारे लिए
१०
मगर प्रेम का रंग
लेकर मैं आई
तुम्हारे लिए

विनीता चौरासिया
शहजहाँपुर उत्तर प्रदेश

कविता दिवस पर फायकू

१
कविता दिवस पर फायकू
आज पहली बार
तुम्हारे लिए
२
लिखने का शौकीन मैं
कविता लिखता रोज
तुम्हारे लिए
३
आज कविता दिवस पर
कुछ लिख रहा
तुम्हारे लिए
४
शब्दों में प्यार भरकर
लिखता मैं फायकू
तुम्हारे लिए
५
कविता का शौकीन हूं
सुनाता हूं कविताएं
तुम्हारे लिए
६
कविता दिवस पर आपको
हार्दिक बधाई शुभकामनाएं
तुम्हारे लिए
७
कविता लिख रहा हूं
बड़े उल्लास से
तुम्हारे लिए
८
कविता में लिखता हूं
दिल की बात
तुम्हारे लिए
९
फायकू से अनजान था
लिखा पहली बार
तुम्हारे लिए
१०
पहली बार लिख रहे
जौली जी फायकू
तुम्हारे लिए

- जयप्रकाश जौली
नजीबाबाद

फायकू कविता पर

१
विश्व कविता दिवस उद्देश्य
है भाषाई ज्ञानोदय
तुम्हारे लिए
२
अतीतकालीन कवियों का ऋणी
भाषा भाव उपयोग
तुम्हारे लिए
३
यूनेस्को द्वारा १९९९ में
स्थापित सांस्कृतिक कविता
तुम्हारे लिए
४
प्रतिवर्ष आज के दिन
कवि करते नवसृजन
तुम्हारे लिए
५
कविता के विविध रूप
गीत छंद सवैया
तुम्हारे लिए
६
दोहा सोरठा चौपाई कुंडलिनी
मुक्तक हाइकू फायकू
तुम्हारे लिए
७
समय बदला हुआ क्षणवादी
रचे सरल फायकू
तुम्हारे लिए
८
तीन पंक्तियों में समाहित
सहज हृदयगाही फायकू
तुम्हारे लिए
९
अभिव्यक्ति मंच पर बीजारोपण
नवविधा फायकू का
तुम्हारे लिए
१०
बधाइयां श्रीमन अनिल अमन जी
प्रेरक फायकू लेखन
तुम्हारे लिए
११
अमर रहे लेखनी सबकी
जबतक है गंगायमुना
तुम्हारे लिए
१२
फायकू का वर्चस्व साम्राज्य
नित्य होवे परिवर्धित
तुम्हारे लिए

डॉ. रेखा सक्सेना
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश।

होली के फायकू

१

कालिंदी कूल मची रे
होली की धूम
तुम्हारे लिए
रंगत, रंगों की बढ़ी
गालों को चूम
तुम्हारे लिए

ग्वाल बाल संग सखा
नाचौ रे कन्हैया
तुम्हारे लिए
राधा भी नृत्य करें
ता ता थैया
तुम्हारे लिए
थिरक रही सखियां भी
संग झूम झूम
तुम्हारे लिए
कालिंदी...................

रंगों की बारिश में
भीगे तन मन
तुम्हारे लिए
बाल वृद्ध जन पर
भी आया यौवन
तुम्हारे लिए
कर रहे शरारत पर
दिखते हैं मासूम
तुम्हारे लिए
कालिंदी..........

२

रंगों की मस्ती में
होली का धमाल
तुम्हारे लिए

गुंझिया, मठरी, सेल, समोसे
टिकिया, इडली, डोसे
तुम्हारे लिए
होली की दावत में
हमने ही परोसे
तुम्हारे लिए
खाओ, इनको लेकर स्वाद
हमारा सारा माल
तुम्हारे लिए

रंग गुलाल खूब उड़ाना
चलेगा नहीं बहाना
तुम्हारे लिए
नाचना ढोल खूब बजाना
रसिया होलियाना गाना
तुम्हारे लिए
रंग अपने रंगे तुमको
अब लालम लाल
तुम्हारे लिए

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'

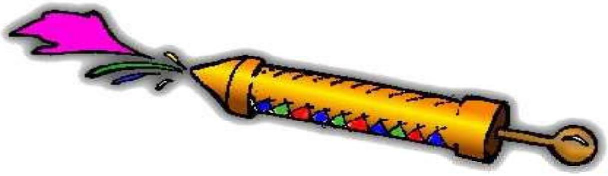

डॉ. अनिल शर्मा
'अनिल'
धामपुर

रंगों से सजीला सिंगार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
उमंग उल्लास फागुनी बयार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

तरंग संग मस्ती व्यवहार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
लाया रंगों की फुहार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

रंगों में भरा प्यार,
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
कहीं कोड़ामार, कहीं लट्ठमार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
रसिया,फाग गायें परिवार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
ढोल बजा रे जोरदार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

भिगोती पिचकारी की धार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
लगते सब रंगे सियार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

नृत्य करें नर-नार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
मिटाये मन के विकार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

रंगे चौराहे घर-बार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
मस्ती करो मिलकर यार
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

मीना जैन

१
होली का रंगीला त्योहार
लाए अनुपम उपहार
तुम्हारे लिए
२
रंग दे चूनर सांवरिया
रहे सारी उमरिया
तुम्हारे लिए
३
रंग केवल प्यार का
फागुनी दुलार का
तुम्हारे लिए
४
रंगों की मर्यादा है
मन सादा है
तुम्हारे लिए
५
मनमुटाव सब मिट जाएं
गले मिल जाएं
तुम्हारे लिए
६
चलो आज उनसे मिलें
जो चेहरे अधखिले
तुम्हारे लिए
७
सुन फागुन की आहट
राह निहारे चौखट
तुम्हारे लिए
८
कैसे खेलूं होली रे
दूर हमजोली रे
तुम्हारे लिए
९
जीवन उत्सव रंग का
मनोहारी संग का
तुम्हारे लिए
१०
परस्पर रहे सद्भाव सदा
स्नेह रंग सर्वदा
तुम्हारे लिए

सीता त्रिवेदी

शाहजहांपुर

१
होली आई रे अब
रंग लाएं हम
तुम्हारे लिए
२
बेरंगी दुनिया में अब
रंग लेकर आई
तुम्हारे लिए
३
रंग बिरंगे चेहरे लेकर
हंसाने आएंगे हम
तुम्हारे लिए
४
लगाने गुलाल अबीर रंग
लेकर आएं हम
तुम्हारे लिए
५
भर कर लाएंगे पिचकारी
होगा रंग पक्का
तुम्हारे लिए

सरोज दुगड़ 'सविता'

खारूपेटिया - असम

१
गांठे मन की खोलकर
आया होली त्योहार
तुम्हारे लिए
२
शरद की सुखद बिदाई
बसंत आया सुखदाई
तुम्हारे लिए
३
रसियों का मन ललचाया
फागुन रंगीला आया
तुम्हारे लिए
४
चंग बजाते गाते रसिये
भंग घोटते आज
तुम्हारे लिए
५
रंग पिचकारी लेकर आया
होली त्यौंहार आया
तुम्हारे लिए
६
प्रेम प्याला पीकर आया
होकर मैं मदहोश
तुम्हारे लिए
७
कोरी चुनरिया ओढ़ी मैने
रंग नहीं छूटे
तुम्हारे लिए
८
जागे भाग गुलाल के
लगा तुम्हारे गाल
तुम्हारे लिए
९
आई फागुन चांदनी रात
जिया मेरा उदास
तुम्हारे लिए
१०
आओ मिल होली खेलें
फूलों लाई आज
तुम्हारे लिए
११
गुंजिया बरफी मैंने बनाई
ठंडाई घोटी आज
तुम्हारे लिए
१२
अमराई में कूहकी कोयलिया
छमछम नाची आज
तुम्हारे लिए
१३
आई फागुन पूनम रात
करती सोलह शृंगार
तुम्हारे लिए
१४
बजता चंग खुलती नींद
मै होती बेचैन
तुम्हारे लिए

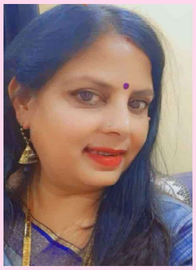

योगिता चौरसिया प्रेमा

मंडला मप्र.

१
फागुन के मधुमास में
रंगो की बरसात
तुम्हारे लिए
२
तन मन प्रेमिल भीगता
सजता रंग गुलाल
तुम्हारे लिए
३
फागुन के पर्व पर
प्रेमिल रखें विकल्प
तुम्हारे लिए
४
फागुन आया अब सखी
होली खेले संग
तुम्हारे लिए
५
फागुन आया देख सखी
मन करता नृत्य
तुम्हारे लिए
६
धर पिचकारी नर नारी
प्रेमिल पड़े फुहार
तुम्हारे लिए
७
रंग रंगी टोली टोली
ढोल मृदंग थाप
तुम्हारे लिए
८
राग द्वेष को भूले
प्रेम पवन डोले
तुम्हारे लिए

सत्येन्द्र शर्मा 'तरंग'

देहरादून

होली इकतालिसा

१
होली आयी होली आयी
हर्ष तरंग लायी
तुम्हारे लिए

२
२०२४ की मार्च पच्चीस
होली पर आशीष
तुम्हारे लिए

३
छाया होली का उल्लास
आया फागुन मास
तुम्हारे लिए

४
फागुन में झूमे संसार
रंगों की बौछार
तुम्हारे लिए

५
फाल्गुन मास की पूर्णिमा
होली की अरुणिमा
तुम्हारे लिए

६
प्रहलाद का है प्रताप
होली के साथ
तुम्हारे लिए

७
करते हैं होलिका दहन
रंगीले वस्त्र पहन
तुम्हारे लिए

८
होली पर लाये लकड़ियाँ
सब लड़के लड़कियाँ
तुम्हारे लिए

९
होली में होलिका-दहन
लाए सुख-चौन
तुम्हारे लिए

१०
अद्‌भुत बरसाने की होली
प्रेम की गोली
तुम्हारे लिए

११
होली नंदगाँव की लट्ठमार
आनन्द लाती बेशुमार
तुम्हारे लिए

१२
झलके राधा कृष्ण प्रेम
होली में क्षेम
तुम्हारे लिए

१३
होली है प्रेम धारा
त्योहार है प्यारा
तुम्हारे लिए

१४
गुंझिया, मिठाई, नमकीन पकवान
होली की है शान
तुम्हारे लिए

१५
मधुर बेला खिले होली
आयी हुलियार टोली
तुम्हारे लिए

१६
गुलाल अबीर उड़े गगन
हृदय हुआ मगन
तुम्हारे लिए

१७
मन में बहती रसधार
गुब्बारों का वार
तुम्हारे लिए

१८
होली में मन मुदित
पुष्प हैं सुरभित
तुम्हारे लिए

१९
मिलकर गायें होली फाग
सुनायें मधुर राग
तुम्हारे लिए

२०
दुलैहण्डी का आया दिवस
पिचकारी बरसाती रस
तुम्हारे लिए

२१
सजनी साजन खेंले होली
बोलें मीठी बोली
तुम्हारे लिए

२२
साजन कहे प्रीत निभाऊँ
होली गीत गाऊँ
तुम्हारे लिए

२३
सजनी से कहते साजन
होली बहुत सुहावन
तुम्हारे लिए

२४
सजनी कहे मेरे साजन
होली हो पावन
तुम्हारे लिए

२५
होली रंगों का त्योहार
बढ़ता इससे प्यार
तुम्हारे लिए

२६
देवर भाभी, जीजा साली
होली रंगों वाली
तुम्हारे लिए

२७
देवर-भाभी की होली
करते हँसी ठिठोली
तुम्हारे लिए

२८
भाभी से कहता देवर
गुलाल होली पर
तुम्हारे लिए

२९
देवर को भौजी भाये
होली पर शरमाये
तुम्हारे लिए

३०
जीजा से कहती साली
होली रंगों वाली
तुम्हारे लिए

३१
जीजा पर मस्ती छाई
सालीजी होली आई
तुम्हारे लिए

३२
साली घर जीजा आयें
होली रंग लायें
तुम्हारे लिए

३३
होली का अबीर गुलाल
रंगों की बहार
तुम्हारे लिए

३४
रंग हरे पीले लाल
मिलकर करते धमाल
तुम्हारे लिए

३५
लाल रंग की पंक्ति
लाती है शक्ति
तुम्हारे लिए

३६
हरे रंग से समृद्धि
करती है वृद्धि
तुम्हारे लिए

३७
नारंगी गुलाबी रंग बयार
लाती धैर्य प्यार
तुम्हारे लिए

३८
नीले रंग से ईमानदारी
लाती यश फुहारी
तुम्हारे लिए

३९
वैभव सम्पन्नता प्रतीक सुनहरा
रंग अतिशय गहरा
तुम्हारे लिए

४०
सुख शान्ति देने वाली
होली लाये खुशहाली
तुम्हारे लिए

४१
होली पर हो भाईचारा
बहे प्रीत रसधारा
तुम्हारे लिए

अनुजा दुबे 'पूजा'

१
होली का त्यौहार निराला
खुशियों का पिटारा
तुम्हारे लिए
२
मिलन का यह त्यौहार
रंगो की बौछार
तुम्हारे लिए
३
मस्तानों की टोली आई
रंगबिरंगी होली आई
तुम्हारे लिए
४
सबको अपने गले लगाएं
बैर भाव भुलाएं
तुम्हारे लिए
५
जीवन भरे ढेरों रंग
गुलाल प्रीत संग
तुम्हारे लिए
६
चटकीले रंग और मिठाई
लिए गुलाल आई
तुम्हारे लिए
७
प्रीत प्रेम संग सद्भाव
मिलन के भाव
तुम्हारे लिए
८
रंगों की यह बरसात
लाई है सौगात
तुम्हारे लिए
९
खुशियों की चले पिचकारी
भौजी सुनाए गारी
तुम्हारे लिए
१०
खिल उठे टेसू लाल
उड़ा है गुलाल
तुम्हारे लिए
११
रंगबिरंगी हुई ये डगर
मिलन का सफर
तुम्हारे लिए
१२
चल पड़ी फागुनी बयार
होली का इंतजार
तुम्हारे लिए
१३
नभ हुआ पीला लाल
रंगों का जमाल
तुम्हारे लिए
१४
धूम मचाता रंग जमाता
हँसी ठिठोली कराता
तुम्हारे लिए
१५
होली का है हुड़दंग
मित्र सभी संग
तुम्हारे लिए
१६
छाया भंग का रंग
मस्ती भरी उमंग
तुम्हारे लिए
१७
झांझ ढोल मृदंग बजा
आएगा अब मजा
तुम्हारे लिए
१८
फागुन की है दस्तक
पंहुची मन तक
तुम्हारे लिए
१९
ऋतु बसंत के साथ
होली का मधुमास
तुम्हारे लिए
२०
तन मन हुआ अधीर
मन रंग अंबीर
तुम्हारे लिए
२१
रंग गुलाल अज बरसे
मन मोरा तरसे
तुम्हारे लिए
२२
रखे मर्यादा का ध्यान
होली पर ज्ञान
तुम्हारे लिए
२३
सब मिलकर होली मनाएं
बधाई एवं शुभकामनाएं
तुम्हारे लिए

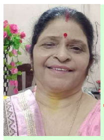

डॉ.रेखा सक्सेना

मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

१
फाग मास की पूर्णिमा
चौराहों पर होलिका
तुम्हारे लिए
२
होली है होली है
बजते ढोल नगाड़े
तुम्हारे लिए
३
रंगों के हुड़दंग में
रंगे पुते मदमस्त
तुम्हारे लिए
४
काला नीला लाल पोत
सब दिखते भूत
तुम्हारे लिए
५
तेल पोतके बाहर जाना
नहीं जमेगा रंग
तुम्हारे लिए
६
सेओ पापड़ी गुजिया से
पूजन करें होलिका
तुम्हारे लिए
७
गन्ना चना जौ बाली
परिक्रमा कर भूनें
तुम्हारे लिए
८
सब बोलें जय होलिका
भक्त प्रह्लाद की
तुम्हारे लिए
९
रंग लगाएं गले मिलें
छूते सबके पांव
तुम्हारे लिए
१०
डीजे धुन सब झूमें
बाजत ढोल मंजीरा
तुम्हारे लिए
११
प्रेम सौहार्द मिलन का
भारत का त्यौहार
तुम्हारे लिए

मनीषी सिन्हा

गाजियाबाद

१
होली आई होली आई
लेकर प्रेम सौहार्द
तुम्हारे लिए
२
रंग रंगीली होली आई
हंसी ठिठोली लाई
तुम्हारे लिए
३
होली के त्योहार में
मेवा मिष्ठान पकवान
तुम्हारे लिए
४
होली के हुल्लड़ में
रंगों की बौछार
तुम्हारे लिए
५
हरी नीली पीली गुलाबी
लाल लाल गुलाल
तुम्हारे लिए
६
होली खेलो जम के
मर्यादा भी आवश्यक
तुम्हारे लिए
७
दिल में हो अपनत्व
मेलजोल, शरारत, मजाक
तुम्हारे लिए
८
लाए अपनों का प्यार
रंगों का त्योहार
तुम्हारे लिए
९
छाए फागुन की मस्ती
कीचड़, पानी, भंग
तुम्हारे लिए
१०
खिले हों सबके चेहरे
दुआ ये हमारी
तुम्हारे लिए

रेनू बाला सिंह

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

१
रघुवर संग होली मचाई
पावस ऋतु आई
तुम्हारे लिए
२
होली का हुड़दंग है
मस्ती संग है
तुम्हारे लिए
३
मस्ती भरी हुई फाग
होलिका दहन आज
तुम्हारे लिए
४
खेलत ब्रज में रसिया
सबके मन बसिया
तुम्हारे लिए
५
बांके बिहारी खेलत होली
धूम गली गली
तुम्हारे लिए
६
होली खेलत नंद लाला
संगन गोपियां ग्वाला
तुम्हारे लिए
७
गारी देती सब सखियां
पकड़ राखी लठियां
तुम्हारे लिए
८
तकि मारे भर पिचकारी
भीजें नर नारी
तुम्हारे लिए
९
ढोल बजाओ मृदंग बजाओ
फागुनी गीत गाओ
तुम्हारे लिए
१०
फागुन में प्रीत बढ़े
वसुधा कुटुम्ब बने
तुम्हारे लिए

डॉ. प्रिया

अयोध्या

१
आया होली का त्योहार
बरसे रंग फुहार
तुम्हारे लिए
२
देखो राज्यों की होली
कविता की बोली
तुम्हारे लिए
३
बरसाने में होली लठमार
उड़े गुलाल भरमार
तुम्हारे लिए
४
वृंदावन में पुष्प होली
मिल जाते हमजोली
तुम्हारे लिए
५
जैसलमेर की पत्थरमार होली
ढोल-नगाड़ा टोली
तुम्हारे लिए
६
मथुरा की साप्ताहिक होली
बनाते सुंदर रंगोली
तुम्हारे लिए
७.
बिहार और उत्तर प्रदेश
गाए फगुआ टोली
तुम्हारे लिए
८
होली में आंध्र-प्रदेश
रंगता मेदरू भेष
तुम्हारे लिए
९
उत्तराखंड में कुमाईनी होली
बुवाई से शुरू
तुम्हारे लिए
१०
महाराष्ट्र में रंग पंचमी
संग ढोल नगाड़े
तुम्हारे लिए
११
गोवा में शिमगो उत्सव
कार्निवाल का वैभव
तुम्हारे लिए

संजय प्रधान

देहरादून

१
अनेकों कथाएं प्रचलित हैं
होली पर्व की
तुम्हारे लिए
२
होलिका हवन हो गई
प्रहलाद जीवित रहे
तुम्हारे लिए
३
तभी से होली मनाई
जाने लगी हमारे
तुम्हारे लिए
४
होली उत्सव मनाने हेतु
अवकाश घोषित है
तुम्हारे लिए
५
गुजिया मिठाई बनाई है
हम सबने मिलकर
तुम्हारे लिए
६
नई पिचकारी सुंगधित रंग
मैं लाया हूं
तुम्हारे लिए
७
बाजार के घटिया रंग,
फायदेमंद नहीं हैं
तुम्हारे लिए
८
नशे पर नियंत्रण रखना
बहुत फायदेमंद है
तुम्हारे लिए
९
वाहन पर नियंत्रण रखना
बहुत फायदेमंद है
तुम्हारे लिए
१०
होली पर पंगा लेना
फायदेमंद नहीं है
तुम्हारे लिए
११
हो जाए हंसी ठिठोली,
इस होली पर
तुम्हारे लिए
१२
रंगीले हो जाएं हम
तो अच्छा है
तुम्हारे लिए
१३
टेसू के फूलों से
मैने रंग बनाए
तुम्हारे लिए
१४
भगवान को टीका लगा
मांगा है वरदान
घ्तुम्हारे लिए
१५
होली पर ने वस्त्र
मैंने मंगवाए हैं
तुम्हारे लिए

चारु राजपूत

बिजनौर

१
आया होली का त्यौहार
लाया रंग बहार
तुम्हारे लिए

२
फाल्गुन में फैली बहार
चली बसंत बयार
तुम्हारे लिए

३
पड़ती रंगों की फुहार
गूंजे राग मल्हार
तुम्हारे लिए

४
बाल वृन्द करते धमाल
बजते ढोल मृदंग
तुम्हारे लिए

५
रंग बिरंगे उड़ते गुलाल
इन्द्रधनुष सी छटा
तुम्हारे लिए

६
टेसु के फूले फूल
वसुधा को सजाये
तुम्हारे लिए

७
प्रेम का पावन पर्व
सौहार्द भाव जगाये
तुम्हारे लिए

८
प्रीत का रंग चढ़ाये
रंग भरी पिचकारी
तुम्हारे लिए

९
भारतीय संस्कृति का प्रतीक
रंगों का त्यौहार
तुम्हारे लिए

नवनीता दुबे नूपुर

मंडला,मप्र,

१
होली के रंग सुहाने
आए हैं दीवाने
तुम्हारे लिए

२
भर भर गुलाल लाल
मीठा भरा थाल
तुम्हारे लिए

३
मलने को गोरे गाल
जीजा आए ससुराल
तुम्हारे लिए

४
गली गली कस्बा मोहल्ला
होली का हल्ला
तुम्हारे लिए

५
हुलियारों की टोली आई
हुड़दंग है मचाई
तुम्हारे लिए

६
जीजा भागे छोड़ गली
साली करे ठिठोली
तुम्हारे लिए

७
नई नवेली भौजाई भी
घात लगाए रंगने
तुम्हारे लिए

८
पड़ोसन ने बनाए देखो
भांग के रसगुल्ले
तुम्हारे लिए

९
चख लिए भूल से
होगी मुश्किल बहुत
तुम्हारे लिए

१०
आपसी स्नेह भाईचारा लेकर
आई होली आई
तुम्हारे लिए

११
इंद्रधनुष से रंग ये
हों न बदरंग
तुम्हारे लिए

१२
देते शुभकामनाएं ढेर बधाई
मर्यादित, खुशहाल होली
तुम्हारे लिए

१३
होली के रंगों सा
रंगीन हर पल
तुम्हारे लिए

१४
हर बुराई रहे दूर
खुशियां ही मुस्कुराएं
तुम्हारे लिए

१५
चटकीले रंगों सा हो
हर दिवस तुम्हारा
तुम्हारे लिए

मैत्री मेहरोत्रा 'मैत्री'

गाजियाबाद उ.प्र.

१
होली में गुजिया पकवान
और घोंटी भांग
तुम्हारे लिए

२
मन में उमंग जगाए
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए

३
आए प्रियतम रंग लगाने
होली के बहाने
तुम्हारे लिए

४
होली रंगों का त्योहार
लाए खुशियां अपार
तुम्हारे लिए

५
मदमाते नयनों का जादू
गाए फगवा साधू
तुम्हारे लिए

६
चढ़े होली का रंग
ठंडाई में भंग
तुम्हारे लिए

७
गोकुल के छलिया कान्हा
बरसाने की राधा
तुम्हारे लिए

८
गिरधारी ढूंढे राधा प्यारी
हाथ कनक पिचकारी
तुम्हारे लिए

९
रंग बरसाएं श्याम मुरारी
भीगें राधा प्यारी
तुम्हारे लिए

१०
राधा कृष्ण जुगल जोड़ी
खेल रहे होली
तुम्हारे लिए

११
उड़े गुलाल छटा निराली
घोंटे भांग शिवानी
तुम्हारे लिए

१२
मसाने की छटा निराली
भांग पिए त्रिपुरारी
तुम्हारे लिए

१३
भस्म उड़ाएं खेलें होली
भूतों की टोली
तुम्हारे लिए

१४
गले मिलो रंग लगाओ
दुशमनी भूल जाओ
तुम्हारे लिए

१५
कांजी पिओ पापड़ खाओ
खूब हुड़दंग मचाओ
तुम्हारे लिए

डॉ.सारंगादेश 'असीम'

१
होली आई होली आई,
रंगभरी पिचकारी लाई
तुम्हारे लिए
२
राधा, कान्हा, गोपी, ग्वालबाल
हिलमिल होली गाई
तुम्हारे लिए
३
दही, बड़े, गुझिया बनाई
भंगपकौड़ी और ठंडाई
तुम्हारे लिए
४
मौका पाकर भाभी संग
देवर करे ढिठाई
तुम्हारे लिए
५
सास, ननद, साली, सलहज
सबने भंग चढ़ाई
तुम्हारे लिए
६
नववधू गोरे गालों पर
डाल गुलाल शरमाई
तुम्हारे लिए
७
सीमाओं पर मोदीजी ने
सेना गले लगाई
तुम्हारे लिए
८
होली बाद चुनावो में
मोदी लाना भाई
तुम्हारे लिए
९
'नाजिया' ने 'सारंगा' संग
होली खूब मनाई
तुम्हारे लिए
१०
अनिल अमानादि सभी ने
खूब धमाल मचाई
तुम्हारे लिए

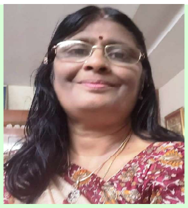

कनक पारख

विशाखापट्टनम

१
फागुन ने दी दस्तक
मस्त, मलंग त्यौहार
तुम्हारे लिए
२
गली गली होली हुड़दंग
दिलों में उमंग
तुम्हारे लिए
३
रंगों की रिमझिम फुहार
आई प्रेम बहार
तुम्हारे लिए
४
सद्भावों के बंधे सेहरे
खिले अधखिले चेहरे
तुम्हारे लिए
५
पिया रंग रंगी चुनरी
पीली, नीली, हरी
तुम्हारे लिए
६
कलुषता मिटायें, लगाकर रंग
बजे ढोलक, चंग
तुम्हारे लिए
७
पिया ने मारी पिचकारी
जीवन भर यारी
तुम्हारे लिए
८
ब्रज की अनोखी होली
आ खेले हमजोली
तुम्हारे लिए
९
आओ करें, हंसी ठिठोली
खुशियां भरी झोली
तुम्हारे लिए
१०
हर घर, द्वार रंगोली
अबीर, गुलाल, रोली
तुम्हारे लिए

नरेश सिंह नयाल

देहरादून,उत्तराखंड

१
रंग तैयार कर लूं
या लिखूं फायकू
तुम्हारे लिए
२
कान्हा खेले होली रंगीली
भीगे राधा बावरी
तुम्हारे लिए
३
पिया संग होली खेलकर
जिया हुआ सतरंगी
तुम्हारे लिए
४
तुम रंग पूरा डालना
वरना भरा ड्रम
तुम्हारे लिए
५
हमें पकड़ों जकड़ों रंगों
छूटे तो श्यामत
तुम्हारे लिए
६
खाऊं गुजिया भंग चखूं
झूम जाऊं आज
तुम्हारे लिए
७
अभिव्यक्ति मन की होगी
अभिव्यक्ति समूह में
तुम्हारे लिए
८
पता है सब लिखोगे
छपोगे ओपन डोर
तुम्हारे लिए
९
सच कहूं तो दिक्कत
या झूठ बोलूं
तुम्हारे लिए
१०
होली है कहकर आओ
बताओ सभी को
तुम्हारे लिए
११
गब्बर पूछ रहा तारीख
सांबा तलाशे तारीख
तुम्हारे लिए
१२
बसंती उस दिन नाचेगी
हर ताल में
तुम्हारे लिए
१३
गांवों की होली निराली
फाग गाए होलियार
तुम्हारे लिए
१४
शहरों में रंग चढ़े
महफिल जम जाए
तुम्हारे लिए
१५
हो मुबारक ये त्यौहार
होली आई अब
तुम्हारे लिए

अक्षि त्यागी

१
होली आयी होली आयी
लाई गुंजिया मठरी
तुम्हारे लिए
२
रंगों की बरसात है
होली का त्यौहार
तुम्हारे लिए
३
लाल गुलाबी पीला नीला
उड़े रंग होली
तुम्हारे लिए
४
होली मथुरा की खुशबू
बरसाने की फुहार
तुम्हारे लिए
५
रंगों का रंगीन त्यौहार
लाये खुशियां आपार
तुम्हारे लिए
६
बुराई पर अच्छाई की
जीत हमेशा होती
तुम्हारे लिए
७
चलो सहेली चलो साथी
आयी है होली
तुम्हारे लिए
८
कोई हँसे कोई रोये
मिले गले सब
तुम्हारे लिए
९
होली है भई होली
प्यारी भरी रंगोली
तुम्हारे लिए
१०
आज अपनी टोली निकली
धूम मचाई है
तुम्हारे लिए

सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी

गदरपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

१
प्रकृति का उपहार मिला
टेसू फूल खिला
तुम्हारे लिए
२
बसंत ऋतु होली लाई
उर उल्लास छाया
तुम्हारे लिए
३
फूल मकरंद गंध फैलाये
सबका मन बहलाये
तुम्हारे लिए
४
बाल वृंद टोली बना
ऊंची होली सजा
तुम्हारे लिए
५
आओ सब प्यार बांटे
सबको लगाए गले
तुम्हारे लिए
६
पीला हरा लाल गुलाल
लाये होली में
तुम्हारे लिए
७
उर मिठास दिया सबको
गुजिया में भर
तुम्हारे लिए
८
प्रमुदित हो लिखें फायकू
विधा सिखाने को
तुम्हारे लिए
९
होली पर गायें मनुहार
दिखाये है प्यार
तुम्हारे लिए
१०
रहे रंगों की बौछार
मिट जाये विकार
तुम्हारे लिए

आभा मिश्रा

प्रयागराज उत्तर प्रदेश

१
फागुन मास बड़ा अलबेला
रंगों का मेला
तुम्हारे लिए
२
होली खेल रहे हमजोली
रंग अबीर रोली
तुम्हारे लिए
३
आई मस्तानों की टोली
व्यंग्य हंसी ठिठोली
तुम्हारे लिए
४
ढोल मंजीरा बाजे मृदंग
बच्चे करते हुड़दंग
तुम्हारे लिए
५
गुंझिया पापड़ मठरी मिठाई
संग में ठंडाई
तुम्हारे लिए
६
बरसाने में उड़े गुलाल
धरती अम्बर लाल
तुम्हारे लिए
७
राधा कृष्ण खेले होली
चेहरे पर रंगोली
तुम्हारे लिए
८
मोहन मारे भर पिचकारी
भींगे चुनार सारी
तुम्हारे लिए
९
मिलकर गले मनाए त्यौहार
प्रेम सद्भाव अपार
तुम्हारे लिए
१०
इंद्रधनुष के रंग सारे
लगते चेहरे प्यारे
तुम्हारे लिए
११
अच्छाई की जीत हुई
सबको हार्दिक बधाई
तुम्हारे लिए

सुनील श्रीवास्तव राज

गोरखपुर

१
आया होली का त्योहार
बरसे रंग फुहार
तुम्हारे लिए
२
रंगों ने किया बेहाल
नीला पीला लाल
तुम्हारे लिए
३
नीलगगन में उड़े अबीर
बाजे ढोल मजीर
तुम्हारे लिए
४
खेला जम कर रंग
हमजोली के संग
तुम्हारे लिए
५
चेहरा हुआ है लाल
हाथों में गुलाल
तुम्हारे लिए
६
मन में खुशियाँ अपार
बहे फागुनी बयार
तुम्हारे लिए
७
पूए गुझिया मठरी पाते
खाते नहीं अघाते
तुम्हारे लिए
८
करती हुई हंसी ठिठोली
घुम रही टोली
तुम्हारे लिए
९
फागुनी मधुमास है आया
सबका मन हरषाया
तुम्हारे लिए
१०
आओ पावन पर्व मनाएँ
सबको गले लगाएँ
तुम्हारे लिए

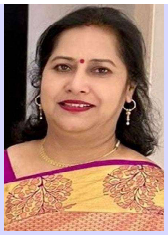

डॉ.पुष्पा सिंह

१
होली का त्योहार रंगीला
बरसे रंग फुहार
तुम्हारे लिए
२
खुशियों की लिए झोली
रंगों का त्योहार
तुम्हारे लिए
३
मिलने का त्योहार निराला
सबको गले लगाते
तुम्हारे लिए
४
प्रेम प्रीत सद्भावना संग
द्वेष भाव मिटाते
तुम्हारे लिए
५
होलिका दहन हर चौराहे
दिली कलुषता मिटती
तुम्हारे लिए
६
लाल गुलाबी नीला पीला
उड़ते रंग अबीर
तुम्हारे लिए
७
गाँव गली मुहल्ले टोले
दिलमें भरे उमंग
तुम्हारे लिए
८
ढोल ताशे बजे मृदंग
फागुनी गाती सारे
तुम्हारे लिए
९
होली पर अनेक पकवान
गुझिया मिठाई पापड़
तुम्हारे लिए
१०
बुराई पर अच्छाई जीतती
परंपरा करते निर्वाह
तुम्हारे लिए

निकेता पाहुजा

रुद्रपुर उत्तराखंड

१
आया फागुन का त्यौहार
होली है सदाबहार
तुम्हारे लिए
२
घूम घूम ढोल बजाकर
फागुन गीत गाऊं
तुम्हारे लिए
३
प्यार के रंग हजार
प्रेम और मनुहार
तुम्हारे लिए
४
जीवन की बगिया में
रंगों की फुहार
तुम्हारे लिए
५
आमों पर छायी मांजर
छायी है बौछार
तुम्हारे लिए
६
होलिका का अंत हुआ
प्रहलाद अमर जीवनपर्यन्त
तुम्हारे लिए
७
भस्म करो ईर्ष्या द्वन्द
होलिका अग्नि संग
तुम्हारे लिए
८
गुझिया, पापड़ और वड़े
खाओ खूब पकवान
तुम्हारे लिए
९
प्रेम रंग में रंगेंगे
कर लो प्रण
तुम्हारे लिए
१०
अंत बुराई का करेंगे
देना प्रभु वरदान
तुम्हारे लिए

मंजू त्यागी

नजीबाबाद

१
होली सबका त्यौहार है
लाये खुशियां हजार
तुम्हारे लिए
२
गली गली मची धूम
आयी है होली
तुम्हारे लिए
३
नाचेंगे गाएंगे धूम मचाएंगे
होली है होली
तुम्हारे लिए
४
आओ मिलकर खुशियां मनाएं
सबको रंग लगाए
तुम्हारे लिए
५
बुराई पर अच्छाई की
सीख देती होली
तुम्हारे लिए
६
बच्चे बूढ़े सब मिलकर
मनाते है होली
तुम्हारे लिए
७
होली के रंगों से
फायकू हुआ रंगीन
तुम्हारे लिए
८
हरा पीला लाल रंग
लाई हूं फायकू
तुम्हारे लिए
९
आयी बच्चो की टोली
लाई हाथ पिचकारी
तुम्हारे लिए
१०
बल्ले बल्ले खाएंगे हम
आलू दही भल्ले
तुम्हारे लिए

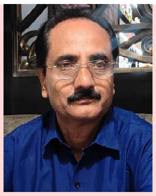

दिनेश कौशल

दरभंगा(बिहार)

१
फाल्गुन का रंग नशीला
गुलाबी या पीला
तुम्हारे लिए
२
करना ना कोई बहाना
होली है आई
तुम्हारे लिए
३
अबीर गुलाल खूब उड़ेंगे
मदमस्त मेरी होली
तुम्हारे लिए
४
भंग हरा, पुआ, मालपुआ
दही बाड़ा, चटनी
तुम्हारे लिए
५
शोर शराबा और शरारत
हम खूब करेंगे
तुम्हारे लिए
६
धूम धड़ाका, हल्ला गुल्ला
प्यार से करेंगे
तुम्हारे लिए
७
कुर्ते तरबतर करेंगे इत्र
की खुशबू से
तुम्हारे लिए
८
बहाने होली के मिलने
आएँगे घर तुम्हारे
तुम्हारे लिए
९
राग द्वेष, नफरत त्याग
होलिका दहन करेंगे
तुम्हारे लिए
१०
रंग इंसानियत के बरसेंगे
देश, दुनिया समाज
तुम्हारे लिए

डॉ. होशियार सिंह यादव

मोहल्ला-मोदीका, वार्ड नंबर ०१
कनीना-१२३०२७ जिला
महेंद्रगढ़ हरियाणा

१
हंसी खुशी ले आया
होली का त्योहार
तुम्हारे लिए
२
हिरण्याकश्यप की याद दिलाता
होली पर्व आज
तुम्हारे लिए
३
रंगों की याद दिलाए
होली पर्व आये
तुम्हारे लिए
४
नहीं खेलते अब गुलाल
रंग डाले पक्का
तुम्हारे लिए
५
विभिन्न पकवान बना रहे
आया होली पर्व
तुम्हारे लिए
६
पिचकारी भर भर लाते
एक दूजे डाले
तुम्हारे लिए
७
रासायनिक रंग बाजार के
नुकसानदायक होते हैं
तुम्हारे लिए
८
शराब पीते पर्व पर
गिरे हुये लोग
तुम्हारे लिए
९
एकता का पर्व सुहाना
आता हर साल
तुम्हारे लिए
१०
लाल पीले काले लगे
कितने ही लोग
तुम्हारे लिए
११
होली के खेल चले
सुंदर होली पर्व
तुम्हारे लिए
१२
टेसू से बनाओ रंग
मिले यही बहार
तुम्हारे लिए
१३
पकवान खा रहे सब
बर्फी बने आज
तुम्हारे लिए
१४
रंगों का अहसास हो
खेले होली आज
तुम्हारे लिए।
१५
फीका न पडने पाये
रंगों का त्योहार
तुम्हारे लिए

संजीव 'दीपक'

धामपुर (बिजनौर)

१
दिल थाम कर बैठिए
धामपुरिया होली लाया
तुम्हारे लिए
२
एकादशी से होता शुरू
त्योहार मौजमस्ती का
तुम्हारे लिए
३
छह दिनों तक चलते
रंगों के फुहारे
तुम्हारे लिए
४
एक से बढ़कर एक
मनमोहक झांकियां हैं
तुम्हारे लिए
५
प्राचीन परम्परा का साक्षी
होली हवन जुलूस
तुम्हारे लिए
६
बच्चे बूढ़े और नौजवान
सबमें है उल्लास
तुम्हारे लिए
७
गुंजिया भल्ले और पकौड़े
सब बनाए खास
तुम्हारे लिए
८
रंगों के जुलूस में
होती हैं प्रतियोगिता
तुम्हारे लिए
९
हाथी घोड़े ढोल नगाड़े
हुरियारों की टोलियां
तुम्हारे लिए
१०
सर्व धर्म सद्भाव सिखाता
रंगों का त्योहार
तुम्हारे लिए
११
जीजा साली देवर भाभी
खूब होती हंसी-ठिठोली
तुम्हारे लिए
१२
दोस्तों की वो टोलियां
मस्ती में झूमते
तुम्हारे लिए
१३
पूरे प्रदेश में मशहूर
धामपुर की होली
तुम्हारे लिए
१४
जिनको रंगों से परहेज
घर पर रहें
तुम्हारे लिए

महेजबीन मेहमूद राजानी

सडक अर्जुनी

देखो देखो होली आयी
हाथों में मै गुलाल लाई
तुम्हारे लिए
होली में आज झूमे नाचे
ढोल नगाड़े बाजे
तुम्हारे लिए
कितना प्यारा पर्व है आया
हर दिल मुस्कुराया
तुम्हारे लिए
दिल से दिल मिल गए
हर चेहरे खिल गए
तुम्हारे लिए
मैंने रंगबिरंगे फूलों को बरसाया
देखो कितना पानी बचाया
तुम्हारे लिए
खेले सूखे रंगो और फूलों से होली
आ गयी मनचलों की टोली
तुम्हारे लिए
होली का तो बहाना है
दूरियां दिलो की मिटाना है
तुम्हारे लिए
देखो मां ने गुजिया बनाई
साथ में मै बताशे लाई
तुम्हारे लिए
होली भाईचारे का संदेश लाई
रंगों की तरह एक हो जाओ भाई
तुम्हारे लिए
पूरा देश ये पर्व मनाए
फाग के गीत मिल गाए
तुम्हारे लिए

डॉ. वीना गर्ग

मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश।

१
सासू जी लाई पिचकारी
भरा जामनी रंग
तुम्हारे लिए
२
गुझिया में भांग मिला
घोल दिया रंग
तुम्हारे लिए
३
लाये हैं देवर जी
रंगों की बाल्टी
तुम्हारे लिए
४
पड़ोसन भी नाचन लागी
लाई लोटे भंग
तुम्हारे लिए
५
बादल भी फेंक रहा
लाल गुलाबी रंग
तुम्हारे लिए
६
सासू जी दौड़ रहे
मुहल्ले के हुलियारे
तुम्हारे लिए
७
पड़ोसन ने पीसी है
ठंडाई में भंग
तुम्हारे लिए
८
पड़ोसी अंकल भी
लाये सासू रंग
तुम्हारे लिए
९
नाच रहे ससुरे जी
सासू मां देखो
तुम्हारे लिए
१०
सजना जी घोल लिया
प्रेम का रंग
तुम्हारे लिए

पवन कुमार सूरज

देहरादून

१
होली का पावन पर्व
खुशियाँ लाया सर्व
तुम्हारे लिए
२
होली रंगों का त्योहार
करें रंगीला संसार
तुम्हारे लिए
३
काम छोड़ दो बदरंग
होली कहे प्रसंग
तुम्हारे लिए
४
मिटाओ राग और द्वेष
होली का संदेश
तुम्हारे लिए
५
जमकर करो हँसी ठिठोली
स्वर्णिम अवसर होली
तुम्हारे लिए
६
लजीज पकवानों के संग
होली लायी उमंग
तुम्हारे लिए
७
रंग दो प्रियतम-शरीर
होली लायी अबीर
तुम्हारे लिए
८
मिलकर नाचो गाओ गीत
होली बजता संगीत
तुम्हारे लिए
९
राग द्वेष गरल मिटाना
होली का अफसाना
तुम्हारे लिए
१०
खुशियों का अपरिमित विस्तार
'सूरज' होली उपहार
तुम्हारे लिए

विनोद शर्मा

धामपुर

१
मचा होली का धमाल
उड़े उड़ेरे गुलाल
तुम्हारे लिए
२
रंगों की चहुँदिस बौछार
इंद्रधनुषी पड़े फुहार
तुम्हारे लिए
३
नगर हमारे होली आय
पाँचदिना खेली जाय
तुम्हारे लिए
४
नगर चौबारे रंगद्रुम सजे
ढोलढमाके खूब बजे
तुम्हारे लिए
५
हर दुल्हैण्डी प्रातः सजे
हवन गुलाल जुलूस
तुम्हारे लिए
६
झांकी हाथी संग तुरंग
जनसैलाब लगाये रंग
तुम्हारे लिए
७
नगर की होली बेमिसाल
खेलखेल सब निहाल
तुम्हारे लिए
८
रंग लगाओ, मलमल नहाओ
चर्म स्वास्थ्य विधान
तुम्हारे लिए
९
रात्रि मध्ये होलिका दहन
रोगकीटाणु सभी भसम
तुम्हारे लिए
१०
भाईचारे का देती संदेश
बहुरंगों में एकवेश
तुम्हारे लिए

साधना

दिल्ली

१
होलिका दहन के बाद
आई रंग बहार
तुम्हारे लिए
२
सत्य की अग्नि में
भस्म हुए छल
तुम्हारे लिए
३
भांग की हिलोर में
भूले अपनी खबर
तुम्हारे लिए
४
उतरा धरती पर व्योम
लिए रंग बौछार
तुम्हारे लिए
५
मस्ती भर पिचकारी में
लाए संग अपने
तुम्हारे लिए
६
ठंडाई भांग की पीकर
लड़खड़ाए मस्ती में
तुम्हारे लिए
७
खाकर भांग के पकौड़े
उड़नखटोला बनी खाट
तुम्हारे लिए
८
फैलाया रंग और सौहार्द
हर दिशा में
तुम्हारे लिए
९
देवर भाभी की चुहल
भर दे मस्ती
तुम्हारे लिए
१०
उड़े रंगों का गुबार
लाए खुशियां अपार
तुम्हारे लिए

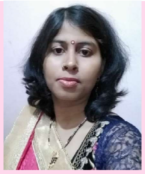

लक्ष्मी सिंह

जलालाबाद शाहजहांपुर

१
मैंने रचे होली फायकू
अनिलजी और त्यागीजी
तुम्हारे लिए

२
फागुन आया होली लाया
उड़े रंग गुलाल
तुम्हारे लिए

३
हरा गुलाबी नीला पीला
अंबर रंग रंगीला
तुम्हारे लिए

४
गिले शिकवे सब भूल
आयी मनाने होली
तुम्हारे लिए

५
अबीर गुलाल रंग केसरिया
मैं लायी सांवरिया
तुम्हारे लिए

६
गोरे गाल हुए गुलाबी
रंग लगाएं सांवरिया
तुम्हारे लिए

७
झूमे ब्रज मथुरा झूमे
कान्हा खेलें होली
तुम्हारे लिए

८
कान्हा की पिचकारी रंगे
चुनर राधा की
तुम्हारे लिए

९
गोपियां जमकर बरसायें लट्ठ
ग्वाले हुए मदमस्त
तुम्हारे लिए

१०
बरसे रंग की फुहार
अयोध्या हुई निहाल
तुम्हारे लिए

११
खेलें होली रघुवर संग
अनुज अवध में
तुम्हारे लिए

१२
सरयू तट पर उड़े
रंग अबीर गुलाल
तुम्हारे लिए

१३
रंग खेले बच्चों की
टोली हुल्लड़ हुड़दंग
तुम्हारे लिए

१४
पापड़ गुझिया दही बड़े
मन से बनाये
तुम्हारे लिए

१५
आओ घर होली मिलने
मैं करूं इंतजार
तुम्हारे लिए

पंडित राकेश मालवीय

मुस्कान

प्रयागराज

१
भौजी आई नाचत गावत
होली आई आज
तुम्हारे लिए

२
रंगों का त्योहार सुहाना
गुझिया पापड़ लाई
तुम्हारे लिए

३
लड़के कुछ ज्यादा बौराने
डाल रहे दाने
तुम्हारे लिए

४
नशा भाँग पीकर आए
नैनों से मुसकाए
तुम्हारे लिए

५
सबका होता आना जाना
गले लगेंगे शायद
तुम्हारे लिए

६
ऋतु भी आज सुहानी
फूल खिल रहे
तुम्हारे लिए

७
ढोल मंजीरे बोले ढमढम
महफिल सजी है
तुम्हारे लिए

८
गंगा यमुना जैसी होली
चल जाएगी गोली
तुम्हारे लिए

९
आज मिठाई खाओ प्यारे
लेकर आई हूँ
तुम्हारे लिए

१०
कपड़े बदलो खेलो होली
बहकी बहकी बोली
तुम्हारे लिए

११
रन्नो सादी निखरी आई
आज रंगेगे उनको
तुम्हारे लिए

१२
उधम कर रहे सारे
लिए गुलाल अबीर
तुम्हारे लिए

१३
मोहन राधा होली खेलो
शिव पार्वती आए
तुम्हारे लिए

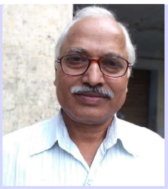

ईश्वर चंद्र जायसवाल

संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश)

१
प्यारी होली आ रही
बहुतायत मुस्का रही
तुम्हारे लिए

२
रंगीला गीत गा रही
मुझको बुला रही
तुम्हारे लिए

३
प्रीत भी बढ़ा रही
रंग बहा रही
तुम्हारे लिए

४
हरा लाल पीला रंग
सबमें भरे उमंग
तुम्हारे लिए

५
सब सुन्दर प्यारी गोरियाँ
चलीं बहुत छोरियाँ
तुम्हारे लिए

६
खूनों में रवानी है
चढ़ती जवानी है
तुम्हारे लिए

७
दिल भी मचल रहा
प्यार अचल रहा
तुम्हारे लिए

८
शौक सब पूरा हुआ
आसमाँ भूरा हुआ
तुम्हारे लिए

९
ठण्डी सी भंग मिली
पीकर कली खिली
तुम्हारे लिए

१०
वाह वाह कर उठे
भँवरे सँवर उठे
तुम्हारे लिए

प्रो. पूनम चौहान

एस बी डी महिला महाविद्यालय
धामपुर बिजनौर, उत्तर प्रदेश

१
होली रंगों की बहार
उड़े अबीर, गुलाल
तुम्हारे लिए
२
बने पकवान, बिखरी सुगंध
गुझिया, पापड़, नमकीन
तुम्हारे लिए
३
पिसेगी भंग, घुटेगी ठंडाई।
झूमे मस्त मलंग
तुम्हारे लिए
४
होके रंगों में सराबोर
मस्त हुए हुरियारे
तुम्हारे लिए
५
साल में आए एकबार
होली की बहार
तुम्हारे लिए
६
मगद, गुलाब, सौंफ, मिश्री
घुटेगी मस्त ठंडाई
तुम्हारे लिए
७
लाया मस्ती, उमंग,उल्लास
होली का त्यौहार
तुम्हारे लिए
८
फागुन में पकी फसल
हंसे खेत खलिहान
तुम्हारे लिए
९
चेहरे रंगोली, हंसी ठिठोली
खुशियों का उपहार
तुम्हारे लिए
१०
देवर भाभी, ननद भौजाई
खूब करें हुड़दंग
तुम्हारे लिए
११
अबकी होली बरसाने में
कान्हा के संग
तुम्हारे लिए
१२
बुराई पर जीती सच्चाई
जले होलिका आज
तुम्हारे लिए
१३
खेलें राधा के संग
कान्हा रंगे सबरंग
तुम्हारे लिए
१४
झूमे नर नार, हुई
रंगों की बौछार
तुम्हारे लिए
१५
भर पिचकारी गोपिन मारी
मले गुलाल नंदकिशोर
तुम्हारे लिए
१६
ढोल नगाड़े बजाते निकले
होली के हुरियारे
तुम्हारे लिए
१५
फागुनी बसन्त ले आया
होली की फुहार
तुम्हारे लिए
१६
दही बड़े, भांग पकोड़ी
बनी कांजी स्वादिष्ट
तुम्हारे लिए
१७
हमने रचे कुछ फायकू
आया होली अंक
तुम्हारे लिए
१८
अबकी होली के रंग
फायकू के संग
तुम्हारे लिए

नवीन जैन अकेला

१
लाया हूँ रंग अनोखे
लाल, हरे, नीले
तुम्हारे लिए
२
फागुन की ये मस्ती
ये उल्लास है
तुम्हारे लिए
३
जल रही है होलिका
प्रहलाद अमर है
तुम्हारे लिए
४
होली की हुड़दंग में
लाया हूँ गुलाल
तुम्हारे लिए
५
गुलाबी गाल होंगे लाल
ये प्रेम रंग
तुम्हारे लिए
६
भूल कर शिकवे सारे
हम खड़े द्वारे
तुम्हारे लिए
७
रंग भरी होली है
रंगों की ठिठोली
तुम्हारे लिए
८
उड़ रहा है गुलाल
हरा, नीला, लाल
तुम्हारे लिए
९
रंग भरी प्रेम पाती
बांचते संगी साथी
तुम्हारे लिए
१०
कृष्ण संग राधा खेले
रंग बड़े अलबेले
तुम्हारे लिए
११
मस्ती में दुनिया सारी
रंगों की बलिहारी
तुम्हारे लिए

विनीता चौरासिया

शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश

१
गाल पर ये गुलाल
लगाया है हमने
तुम्हारे लिए
२
ये रंगों की होली
मित्रों की टोली
तुम्हारे लिए
३
भूल कर आई सब
गिले और शिकवे
तुम्हारे लिए
४
अबीर गुलाल सबके लिए
प्रेम का रंग
तुम्हारे लिए
५
बैर दिल से मिटाया
भरा प्रेम रंग
तुम्हारे लिए
६
ये गुजिया ये पापड़
प्याले में भंग
तुम्हारे लिए
७
छोड कर वो उदासी
भरी है उमंग
तुम्हारे लिए
८
प्रतीक्षा में है ये
होली का रंग
तुम्हारे लिए
९
ढाड़े जमुना के तीर
कान्हा लेके अबीर
तुम्हारे लिए
१०
सीमा पे गये जो
की जान निसार
तुम्हारे लिए

सुमन बिष्ट

नोएडा

१

फागुन की उजली पूर्णिमा
आया होली त्योहार
तुम्हारे लिए

२

बसंतोत्सव का फाग त्योहार
बहे मधुमास बयार
तुम्हारे लिए

३

रंगरंगीला होली का त्योहार लाया
खुशियाँ अपार
तुम्हारे लिए

४

इन्द्रधनुषी रंगों का त्योहार
बरसे अबीर गुलाल
तुम्हारे लिए

५

लाल, गुलाबी, नीला, पीला
मुखड़ा दमके रंगरंगीला
तुम्हारे लिए

६

केसरिया टेसू फूल खिले
बासंती छटा लिए
तुम्हारे लिए

७

रंगों से सराबोर करने
पिचकारी भर लाई
तुम्हारे लिए

८

गुझिया, मेवा, मीठा पान
केसरिया ठंडाई बनायी
तुम्हारे लिए

९

देख फगवाइयों की टोली
झटपट चुनरिया ओढ़ी
तुम्हारे लिए

१०

अमिट प्रेमरंग लाई मैं
सजना बस एक
तुम्हारे लिए

११

अपने रंग, रंगों मुझे
बावरी मैं डोलूँ
तुम्हारे लिए

१२

रंगों की खुमारी में
मदमस्त बहक जाऊँ
तुम्हारे लिए

शुभा शुक्ला निशा

रायपुर छत्तीसगढ़

१

खुशियों का त्योहार होली
रंग बिरंगे चेहरे
तुम्हारे लिए

२

नीला पीला हरा गुलाबी
कच्चा पक्का रंग
तुम्हारे लिए

३

जीवन उज्जवल हो और
रंग भरा सदा
तुम्हारे लिए

४

लगा माथे पर तिलक
ईश्वर से मनुहार
तुम्हारे लिए

५

लेकर आई ठंडी भांग
मीठी सी गुजिया
तुम्हारे लिए

६

रंगीन पानी के गुब्बारे
छुपा पीछे हांथ
तुम्हारे लिए

७

दोस्तो की रंगी टोली
पहुंच गई द्वार
तुम्हारे लिए

८

सूखी हो या गीली
होली रे होली
तुम्हारे लिए

९

सूखी होली ही खेलो
पानी बचा लो
तुम्हारे लिए

१०

याद आया आज फिर
ससुराल की होली
तुम्हारे लिए

११

चुपके से मंगाया था
देवर से रंग
तुम्हारे लिए

१२

बिना बताए मल दिया
सजनी ने रंग
तुम्हारे लिए

१३

कान्हा और राधा की
होली फूल वाली
तुम्हारे लिए

१४

क्या समझाना चाहते हैं
कितना अच्छा संदेश
तुम्हारे लिए

१५

रंगो में आया हर्बल
बचाने सबका तन
तुम्हारे लिए

१६

देश के वीर भाई खेले
खून की होली
तुम्हारे लिए

१७

होली की हार्दिक बधाई
भेजती है निशा
तुम्हारे लिए

१८

प्रेम का होता संचार
सर्वत्र संसार में
तुम्हारे लिए

१९

आज खेले होली खूब
छोड़ बैर निंबोली
तुम्हारे लिए

२०

गले मिले प्रेम करें
खुशियों का त्योहार
तुम्हारे लिए

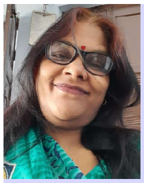

अल्पना जैन

धामपुर

१

होली का ये हुड़दंग
फागुन की मस्ती
तुम्हारे लिए

२

नीला काला पीला रंग
और अबीर गुलाल
तुम्हारे लिए

३

बरसाने में राधा संग
कृष्णा खेले होली
तुम्हारे लिए

४

बाल वृध्द युवा सब
मिल खेले होली
तुम्हारे लिए

५

वृंदावन के बाद अब
धामपुर की होली
तुम्हारे लिए

६

होली में घुल जाए
सब बैर भाव
तुम्हारे लिए

७

ना रहे कोई शिकवा
बरसे प्रेम रंग
तुम्हारे लिए

संतोष गर्ग

पंचकूला

१
होली त्यौहार जब आए
नई उम्मीदें गुदगुदायें
तुम्हारे लिए
२
होली के गीत गाऊं
आंगन रंगोली सजाऊं
तुम्हारे लिए
३
याद आया भूला जमाना
चुपके चॉकलेट लाना
तुम्हारे लिए
४
त्योहार की अद्‌भुत शान
नाच और गान
तुम्हारे लिए
५
मचेगा आज घना हुडदंग
लाई हूं रंग
तुम्हारे लिए
६
रग रग चढ़ा खुमार
रंगों की बहार
तुम्हारे लिए
७
नीले, पीले, रंग हरे
मन मस्ती भरे
तुम्हारे लिए
८
मनवा आज भागता जाए
मंद मंद मुस्काए
तुम्हारे लिए
९
सब काम छोड़ देंगे
हाथों में रंग लेंगे
तुम्हारे लिए
१०
गुजिया खिलाकर 'संतोष' पाऊंगी
पिज़्ज़ा भी मंगवाऊंगी
तुम्हारे लिए

रंजना हरित

बिजनौर उत्तर प्रदेश

१
रंग बिरंगी आयी होली
पिया बना फिरंगी
तुम्हारे लिए
२
सुंदर-सुंदर ड्रेस पहन
कन्या घर आए
तुम्हारे लिए
३
पान जीभ चांद सितारे
बुरकले की माला
तुम्हारे लिए
४
फूल, गुड, चावल, प्रसाद
होली पर पूजन
तुम्हारे लिए
५
इंद्रधनुष सी छटा बिखेरे
उड़ते रंग गुलाल
तुम्हारे लिए
६
हौले हौले जिया डोले
हमजौली के संग
तुम्हारे लिए
७
गुझिया, मठरी, सेम, पकौड़ी
दही भल्ले बनाए
तुम्हारे लिए
८
भांग- पकौड़ी, गुझिया -कचौरी
खट्टे- मीठे पकवान
तुम्हारे लिए
९
भर पिचकारी काहे मारी
हो गई बावरिया
तुम्हारे लिए

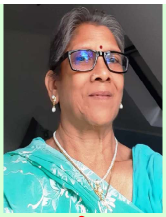

सुषमा श्रीवास्तव

रूद्रपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

१
बासंती फूलों से रंग
चुरा कर लाया
तुम्हारे लिए
२
रंगों की सौगात ले आया
होली का त्यौहार
तुम्हारे लिए
३
नेह की डोर बांधे
शत्रु बने मित्र
तुम्हारे लिए
४
प्रेम की खुश्बू बिखेरे
मिलन का त्यौहार
तुम्हारे लिए
५
आबाल-वृद्ध मदमस्त हुए
गाते मनोहर होरी
तुम्हारे लिए
६
बुराइयां समेटे जली होलिका
हर्षोल्लास से मनाएं
तुम्हारे लिए
७
हुई भोर उड़त गुलाल
रंगों की बौछार
तुम्हारे लिए
८
वसन-वदन भए रंगीन
पहचान न पाएं
तुम्हारे लिए
९
गुझियों पकवानों से भरे
थाल जोहें बाट
तुम्हारे लिए
१०
इत्र की डाल फुहार
स्नेही गले मिलें
तुम्हारे लिए
११
कल का न्योता देते
आना परिवार सहित
तुम्हारे लिए
१२
अगले बरष होरी आवे
फिरसे मौज मनाएं
तुम्हारे लिए
१३
फाग रंगीली जवानी लावै
जीभर ऊधम मचावें
तुम्हारे लिए
१४
बरष-बरष का रंगीला
मिठास भरा त्यौहार
तुम्हारे लिए

निर्मला जोशी 'निर्मल'

हलद्वानी, उत्तराखंड।

१
फागुन मास बसंत ऋतु
फाग सदा सुखदाई
तुम्हारे लिए
२
होली का त्योहार रंगीला
सौगातें लेकर आया
तुम्हारे लिए
३
होली की मस्त बहार
लेके आया फागुन
तुम्हारे लिए
४
शीत ऋतु विदा हुई
वासंती मधुमास आया
तुम्हारे लिए
५
प्रेम प्यार सद्भाव के
रंग लाई होली
तुम्हारे लिए
६
होली खेलो प्यार से
टेसू रंग लाई
तुम्हारे लिए
७
मन का सारा कलुष
मिटाने आई होली
तुम्हारे लिए
८
मन की गिरहें खोलो
संदेश लाई होली
तुम्हारे लिए
९
बदसलूकी नहीं किसी से
शालीनता का पर्व
तुम्हारे लिए
१०
सदा सुख मंगल बरसे
होली हो सुखदाई
तुम्हारे लिए

विभोर अग्रवाल

धामपुर बिजनौर

१
आया होली का त्यौहार
छाई खुशियां अपार
तुम्हारे लिए
२
होली खेले नंदलाल, गोपियों
संग अमीर गुलाल
तुम्हारे लिए
३
राधिका सखियों संग लाई
पिचकारी और गुलाल
तुम्हारे लिए
४
सखा कृष्ण को रंग
लगाया मन हर्षित
तुम्हारे लिए
५
कृष्ण, ने रंग दी
राधा चुनरिया रंगी
तुम्हारे लिए
६
देख कृष्ण को बोली
राधा चतुर सुजान
तुम्हारे लिए
७
लायी माखन और मिश्री
सखा श्याम प्यारे
तुम्हारे लिए
८
मन भर कर खाओ
माखन मिश्री खूब
तुम्हारे लिए
९
सखिया ने संग खूब
मचेगा धमाल कृष्ण
तुम्हारे लिए
१०
गालों में प्रेम का
गुलाल लगाकर प्रेम
तुम्हारे लिए
११
सारे ब्रिज में गुलाल
रंगों रंगी नगरिया
तुम्हारे लिए
१२
प्रेम के रंग में
रंग गई राधा
तुम्हारे लिए
१४
ब्रज में खुशी त्यौहार
राधा साखी संग
तुम्हारे लिए

संदीप कुमार शर्मा

नजीबाबाद, बिजनौर

१
होली आई होली आई
ढेरों खुशियां लाई
तुम्हारे लिए
२
फागुन मास की पूर्णिमा
बसंतोत्सव का त्यौहार
तुम्हारे लिए
३
कृष्ण संग होली मनाएं
वृंदावन की गोपियां
तुम्हारे लिए
४
गोपियों संग रास रचाएं
गोकुल के नंदलाल
तुम्हारे लिए
५
प्रेम भाव संग होली
आओ खेले मिलकर
तुम्हारे लिए
६
ढेर सारे पकवान और
गुंजियों की महक
तुम्हारे लिए।
७
जबरदस्ती बिल्कुल नहीं करेंगें
लगाएंगे रंग भी
तुम्हारे लिए।
८
मादक पदार्थ नहीं पियेंगे
सिर्फ खाएंगे पकवान
तुम्हारे लिए
९
रंग गुलाल खूब उड़ाएंगे
मिलकर होली मनाएंगे
तुम्हारे लिए।
१०
वृंदावन कुंज गली में
होली खेले नन्दलाल
तुम्हारे लिए।
११
श्याम तेरी होली में
बरसे रंग गुलाल
तुम्हारे लिए
१२
होली खेलन आई राधा
आओ मदन गोपाल
तुम्हारे लिए।
१३
होली खेलन आओ नंदकिशोर
नन्द गांव से
तुम्हारे लिए।
१४
रंग डरो ना सांवरिया
मेरा बिगड़ो श्रृंगार
तुम्हारे लिए।
१५
रंग डालेंगे हम जरुर
बुरा न मानो
तुम्हारे लिए

होली पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

आनन्द पाठक
'अभिनव'
कौशाम्बी-उत्तर प्रदेश

१
विष्णु नाम मंत्र जप
भक्त प्रह्लाद हुए
तुम्हारे लिए
२
होलिका यूँ जल गयी
बचे प्रह्लाद तब
तुम्हारे लिए
३
राक्षसी प्रवृत्ति अंत हुआ
भक्त की जयकार
तुम्हारे लिए
४
मिलन हुआ आज रे!
भौतिक, अध्यात्म का
तुम्हारे लिए
५
धुलेंडी रंगों से सज
उच्छृंखलता प्रकट हुई
तुम्हारे लिए
६
भाँग सिर पर सवार
गाये होली रे!
तुम्हारे लिए
७
विरहिणी भी घर सजाया
पुकारे साजन आ
तुम्हारे लिए
८
दुश्मन,मित्र गले मिले
रंग एकरस हुए
तुम्हारे लिए
९
राधा कृष्ण एक हुए
वियोग छोड़ सारे
तुम्हारे लिए
१०
बुरा न मानो होली
कहे 'अभिनव' अब
तुम्हारे लिए

अमन कुमार त्यागी
नजीबाबाद

१
फागुन महका, फसल नई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
२
रंग, गुलाल, पिचकारी, मिठाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
३
कोयल कूकी, छायी अमराई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
४
लकड़ी समेटी, आग लगाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
५
हुई चेहरों की रंगाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
६
गुंजिया, मठरी और ठंडाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
७
मस्ती रंगीली खूब छाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
८
लगाए रंग लोग लुगाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
९
किस किसकी होगी धुलाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए
१०
हाथ मिलाई, गले लगाई
आई, होली आई
तुम्हारे लिए

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

नियमित ग्राहक बनें

ओपन डोर

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८	४
द्विवार्षिक	- १६००	९६	८
पंचवार्षिक	- ४५००	२४०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

विज्ञापन दर निम्नवत है-

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

https://www.youtube.com/@OPENDOORNews
https://opendoornews.in

नियमित ग्राहक बनें

₹ 200 RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

SHODHADARSH
Bank
Indian Overseas Bank,
Branch-Najibabad
AC- 368602000000186
IFSC- IOBA0003686

RNI- UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४	१
द्विवार्षिक	- १६००	८	२
पंचवार्षिक	- ४५००	२०	५

रजिस्टर्ड पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Email- shodhadarsh2018@gmail.com Mob.- 9897742814

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

https://www.shodhadarsh.page

त्रैमासिक

शोधादर्श

RNI - UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

SHODHADARSH

A Quarterly Peer Reviewed and Refereed Research Magazine

राष्ट्रवादी विचारों का 'शोधादर्श शोध संस्थान'

('शोधादर्श' पत्रिका द्वारा नियंत्रित)

जुड़ने वाले लोग

- कोई भी, जो व्यसनी/अपराधी/ पागल न हो। सकारात्मक विचार वाला हो। किसी भी राजनीतिक अथवा अराजनीतिक संगठन से जुड़ा हो। कहीं भी कार्यरत हो। किसी भी धर्म और जाति का हो। रहता कहीं भी हो मगर भारतीय हो। किसी भी आयु का हो। अपने विचार लिखकर और बोलकर व्यक्त कर सकता हो। अनुशासन का पालन करने वाला हो। दूसरे के विचार सुनने वाला हो। राष्ट्र और समाज के प्रति किसी निर्णय पर पहुंचने वाला हो। सहयोग करने वाला हो, चुगलखोर और मजाक बनाने वाला न हो। शिक्षक, पत्रकार, चिकित्सक, वकील आदि कोई भी हो। कोई भी भाषा-भाषी हो सकता है। शिक्षित अथवा अशिक्षित हो। अनिवार्यतः 'शोधादर्श' पत्रिका की कम से कम वार्षिक सदस्यता प्राप्त की हो।

हमारे उद्देश्य

- राष्ट्र और राष्ट्र की समस्याओं पर विधिपूर्वक चर्चा की जाएगी। राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए विचार व्यक्त किए जाएंगे। शिक्षा और शोध पर विशेष ध्यान रहेगा। सरकार की नीतियों और उसमें सुधार पर चर्चा कर सरकार को अवगत कराया जाएगा।
- लगभग एक लाख पुस्तकों, पत्रिकाओं, रिपोर्ट आदि की पीडीएफ 'शोधादर्श' की वैबसाइट पर निशुल्क उपलब्ध कराने का प्रयास।

क्या नहीं होगा

- यह संस्था कोई देश विरोधी कार्य नहीं करेगी। यह संस्था देश में किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं फैलाएगी।

आय

- उद्‌देश्यपूर्ति के लिए दान, चंदा, सहयोग आदि के रूप में धन स्वीकार किया जाएगा।

व्यय

- प्रचार, प्रसार, प्रकाशन, यातायात, आयोजन, मदद, सहयोग आदि पर व्यय किया जाएगा

पंजीकरण

- यह संस्थान त्रैमासिक पत्रिका 'शोधादर्श' का सहयोगी नॉन कॉमर्शियल संगठन (वैचारिक) होगा। इसलिए अलग से संगठन के रजिस्ट्रेशन की आवश्यकता नहीं है किन्तु भविष्य में जब भी संगठन को रजिस्टर्ड कराने की आवश्यकता होगी तब विधिपूर्वक नीति अपनाई जाएगी। फिलहाल संगठन में कोई स्थाई अध्यक्ष या पदाधिकारी नहीं होगा। जहां कहीं भी कोई कार्यक्रम कराया जाएगा वहां की अस्थाई कार्यकारी समिति बनाई जाएगी जो कार्यक्रम के तुरंत बाद भंग मान ली जाएगी।

राष्ट्रवादी विचारों के 'शोधादर्श शोध संस्थान' अभियान से जुड़ें और राष्ट्र के विकास में सहयोग करें

'शोधादर्श' के अंग्रेजी संस्करण के लिए प्रयासरत हैं, संभवतः २०२४ में सफलता मिल जाए

https://www.shodhadarsh.page/ के अतिरिक्त एक और अन्य वैबसाइट पर काम चल रहा है, जिसमें शोध प्रवृत्ति को बढ़ाने संबंधी अनेक सुविधाएं होंगी

संपादक (शोधादर्श) सचलभाष – 9897742814 (वाट्सएप)

आपकी सदस्यता हमें बड़ा सहयोग प्रदान करेगी

वार्षिक सदस्यता : 1000 रु. पांच वर्ष सदस्यता : 4500 रु.

भुगतान करें

SHODHADARSH

INDIAN OVERSEES BANK, NAJIBABAD AC- 368602000000186 IFSC- IOBA0003686

भुगतान पर्ची 9897742814 पर भेजें